बाल-चरितमाला—सं० २७

महामना ग्लैडस्टन



हिन्दी प्रेस, प्रयाग

महामना ग्लैडस्टन

लेखक....

श्रीपरिपूर्णानन्द वर्मा

सम्पादक

रामजीलाल शर्म्मा

प्रकाशक

हिन्दी प्रेस, प्रयाग

प्रथम बार] [मूल्य ।)

मुद्रक और प्रकाशक
रघुनन्दन शर्म्मा, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

विषय-सूची

महामना ग्लैडस्टन

वंश-परिचय

"काम-काज के समय हमारे साथियों का हमारे चरित्र पर उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना छुट्टी के समय के हमारे मित्रों का।"

—ल्यूथर एच० गलिक, एम० डी०

अंग्रेज़ों की जन्मभूमि इङ्गलैण्ड-टापू के उत्तरी हिस्से को स्काटलैण्ड कहते हैं। यह सुन्दर पहाड़ियों से घिरा सुन्दर सूबा भाव, भाषा, रहन-सहन व विचार आदि में इङ्गलैण्ड से बहुत भिन्न होने पर भी, अब इङ्गलैण्ड में ही मिला हुआ है और राज-काज एक साथ

होता है। स्काटलैण्ड निवासी अपने देश की प्रकृति के कारण स्वभाव से बड़े परिश्रमी व वीर होते हैं। स्काट-भूमि ने बहुत बड़े विद्वान्, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ तथा महाराज पैदा किए हैं।

इसी स्काटलैण्ड में लानार्कशायर नामक एक रमणीक स्थान है। यह छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है और इन पहाड़ियों में बाज़ चिड़िया बहुत रहती थीं। आज से सैकड़ों वर्ष पहले यहाँ एक बहुत धनी ज़मींदार-परिवार रहता था; जिसका ख़ान्दानी नाम 'ग्लैडस्टेन्स पड़ गया था। ग्लैड का अर्थ है बाज़ चिड़िया और स्टेन्स उन पहाड़ियों का नाम है। इसी आधार पर इस ज़मींदार-ख़ान्दान का नाम पड़ गया।

आज के सात सौ वर्ष पहले तक इतिहास में ऐसी घटनायें मिलती हैं जिनसे पता चलता है कि अपनी रियासत के कारण इस ख़ान्दान की बड़ी इज्ज़त थी। लेकिन, धीरे-धीरे यह रियासत राजनीतिक झगड़ों में कम होती गई और क़रीब ढाई सौ वर्ष हुए यह कुछ भी नहीं रह गई। ग्लैडस्टेन्स अपनी जन्मभूमि छोड़कर पास के एक क़स्बे में आकर रोज़गार करने लगे। सच है सब दिन बराबर नहीं जाते।

अपनी रियासत एक दम खो देने के बाद, यह परिवार ग्लैडस्टेन्स नाम भी खो बैठा। परन्तु, शहर में ये लोग "ग्लैडस्टन" पुकारे जाने लगे। लगभग दो सौ वर्ष से ऊपर हुए, इनकी यह दशा भी बदली।

इंग्लेण्ड में तिज़ारत

उस समय ख़ान्दान का सबसे बड़ा लड़का, मिस्टर जॉन ग्लैडस्टन इङ्गलैण्ड के प्रमुख नगर लिवरपूल में व्यापार के काम से भेजा गया था। यहाँ एक धनी नाज के व्यापारी से इनकी भेंट हो गई और उसकी सलाह से वे वहीं आकर बस गए। बुरे दिन हमेशा नहीं रहते। इस ख़ान्दान का भाग्य भी चमक उठा और महाशय जॉन ग्लैडस्टन लिवरपूल के बहुत धनी सौदागर हो गए और कुछ ही दिन में 'सौदागरों के राजा' कहे जाने लगे।

संस्कृत का एक प्रसिद्ध श्लोक है कि, "सर्वे गुणा काञ्चन माश्रयन्ति" अर्थात् दुनिया के सभी गुण सोना होने पर निर्भर करते हैं (आ जाते हैं)। इसी प्रकार यह परिवार भी धनी होने के साथ गुणी भी माना जाने लगा। जाँन ग्लैडस्टन बृटिश साधारण सभा (हाउस आव कामन्स) के मेम्बर हो गए और पार्लामेण्ट की मेम्बरी के बाद इन्हें 'सर' की प्रतिष्ठाजनक उपाधि भी मिल गई।

जान ग्लैडस्टन बड़े योग्य आदमी थे। आलस तो इन्हें छू तक न गया था और कठिनाइयाँ इनके लिए कोई चीज़ ही न थीं। जिस प्रकार सोना आग में जितना तपाया जायगा उतना ही खरा होगा; उसी प्रकार जितनी ही कठिनाइयाँ आपके सामने आतीं, आपकी योग्यता,

आपकी शक्ति, आपका बड़प्पन और भी तेज़ होता। प्रसिद्ध लेखक मारले ने तो यहाँ तक लिखा है कि, इनमें सबसे बड़ी ख़ासियत यह थी कि, किसी भी समुदाय, किसी भी आदमी से, चाहे वह इनका विरोधी हो या मित्र, उस पर इतना प्रभाव डालते कि बिना इनकी इज्ज़त किए वह रह ही नहीं सकता था। विरले ही ऐसे भाग्यशाली होते हैं जो सबसे अपनी इज्ज़त करा सकें। इनका जनता में काफ़ी मान था तथा राजनीतिज्ञों में अच्छी प्रशंसा थी। इस महापुरुष के छः पुत्र थे।

योग्य-सन्तान

ज्येष्ठ पुत्र, पिता के मरने पर, उनके स्थान पर "सर" की उपाधि पा गया। सर टामस ग्लैडस्टन यद्यपि योग्यता में कम न थे; किन्तु, राजनीति में इन्होंने विशेष दख़ल नहीं दिया। विचार में सदैव पुराने ख़याल वाले होने के कारण, उन दिनों इग्लैण्ड में नई बहती हवा में इन्होंने अपने को परीशान न किया और अपनी नई रियासत तथा व्यापार की ही देख-भाल में समय बिताया। कुछ आरामतलब प्रकृति होने के कारण समाज पर इन्होंने।अपनी कोई छाप न छोड़ी।

किन्तु, इनके दूसरे छोटे भाई श्री राबर्टसन ग्लैडस्टन बड़े योग्य आदमी थे। ६ फीट ७ इञ्च लम्बे, मोटे-तगड़े तथा कुछ भोंदूपन लिए हुए—यह आदमी राजनीति में जितनी योग्यता

रखता था उतनी ही व्यापार में भी। राजनीति के गूढ़ प्रश्नों में इनकी योग्यता बहुत बढ़ी-चढ़ी हुई थी तथा आर्थिक-धन सम्बन्धी प्रश्नों पर भी इनका ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा हुआ था।

लिवरपूल—नगर में तो ये भूत की तरह मशहूर थे। ऊँचे तथा दृढ़ चरित्र-बल का यह विद्वान् पहले पुराने विचारों वाले राजनीतिक दल—अनुदार दल—जिसे 'टोरी' या कांज़र्वेटिव दल कहते हैं—का था। पर पीछे यह नर्म दल के होगए और नये विचार वालों के साथ हो गए। स्वभाव से कुछ सनकी होने पर भी—सन की का अर्थ अपनी धुन का झक्की कहा जा सकता है—बड़े शिष्ट और सभ्य थे। इनमें व्याख्यान देने की योग्यता बहुत बढ़ी-चढ़ी थी तथा भाषा का बड़ा मधुर प्रयोग जानते थे। कहते हैं कि मि० राबर्टसन ग्लैडस्टन अपने समय के सबसे बड़े स्पष्टवक्ता और राजनीतिज्ञ थे।

इसी महाशय राबर्टसन ग्लैडस्टन के छोटे भाई हमारे महामना श्रीविलियम इवार्ट ग्लैडस्टन थे। हमने इनके भाग्यवान् तथा अति योग्य पिता सर श्रीजॉन ग्लैडस्टन का परिचय पाठकों को करा दिया है। अपने पिता की चौथी सन्तान होने के कारण घरेलू झगड़े इनके सर पर नहीं पड़ सके थे तथा पनपने और संसार में उन्नति करने का पर्याप्त अवसर मिला था। राजनीति की शिक्षा, बहस-मुबाहिसे की तालीम, दुनिया की आम हालत का ज्ञान यह सब बचपन से ही इन्होंने अपने पिता से ग्रहण किया। पिता ने बालकों की तार्किक तथा व्याख्यान

सम्बन्धी शक्ति बढ़ाने के लिए एक विचित्र तरीक़ा निकाल रक्खा था। हमारे यहाँ इसे बदतमीज़ी समझा जायगा तथा ज़बांद-राज़ी कहा जायगा; पर, बच्चे का कोमल मस्तिष्क अगर किसी तरह पनप सकता है तो वह यही तरीक़ा है।

जॉन ग्लैडस्टन हर बात में अपने बच्चों से बहस करते थे। कोई भी बात बिना 'क्यों' के नहीं हो पाती थी। हरेक लड़का एक-दूसरे से बहस में बाज़ी मारकर अपनी बात ऊपर करना चाहता था। हरेक के दिल में अपनी बात और नज़ीरें सबसे अच्छी साबित करने की धुन रहती थी। इस कारण राजनीति, क़ानून, समाज सबका पचड़ा पेश हो जाता था। एक लेखक तो लिखते हैं कि प्रसिद्ध अँग्रेज़ी-नाटककार शेक्सपियर ने जिस प्रकार फ्रान्स के मशहूर शासक नेवारी के बादशाह की अदालत को 'पाठशाला' बतलाया है, उसी प्रकार ग्लैडस्टन-परिवार भी 'पाठशाला' के समान था।

अस्तु, ऐसी ही शिक्षा ने आगे जाकर हमारे चरित्रनायक श्रीग्लैडस्टन को बृटिश पार्लामेण्ट में बहस करनेवाला एक जग-मगाता हीरा बना दिया; जिसकी तर्क-शक्ति के आगे शत्रु तथा विरोधी-दल काँपा करते थे। ईश्वर को जिसे बड़ा बनाना होता है, उसे ऐसी परिस्थिति में डाल देता है कि चारों ओर से उसे महान् बनने में सहायता मिलती है।

हमारे ग्लैडस्टन को कहते हैं, अपने बड़े भाई श्रीराबर्टसन से बड़ी सहायता मिलती थी। जब-जब ये इङ्गलैण्ड के प्रधान

खज़ाञ्ची (चांसलर आफ़ दी एक्सचेकर) होते थे और सारे साम्राज्य का धन इनके हाथों में आता था—तब तब अपना बज़ट, हिसाब-किताब बनाने में इन्हें अपने भाई राबर्टसन से बड़ी सहायता मिलती थी। कहते हैं कि हिसाब-किताब का सारा ब्यौरा वे ही तैयार करते थे, नाम ज़रूर ग्लैडस्टन का होता था।

अस्तु, इसी सुयोग्य वंश तथा कुटुम्ब में, आज के पूरे १२० वर्ष पहले लिवरपूल नगर के रोडनेस्ट्रीट नामक मुहल्ले में २६ दिसम्बर १८०६ में श्रीविलियम इवार्ट ग्लैडस्टन का जन्म हुआ। बहुत थोड़ी ही अवस्था में 'सीफ़ोर्थ' के पादरी-स्कूल में ये भर्ती किये गए। लिवरपूल नगर के पड़ोस में ही यह स्थान था तथा इसी स्कूल में थोड़े दिनों तक इनकी शिक्षा की जड़ जमाई गई। ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही एटेन के प्रसिद्ध स्कूल में इन्हें भर्ती करा दिया गया।

शिक्षा

एटेन स्कूल की पढ़ाई के विषय में लिखते समय लेखक को स्वयं रोमाञ्च हो आता है। वास्तव में इसे 'बालकों का स्वर्ग' कहा जाय तो कोई आपत्ति न होगी। यही कारण है कि डण्डे के ज़ोर पर बालक कुछ पढ़ना चाहे या न चाहे, उसे ज़बरदस्ती पढ़ानेवाले अँग्रेज़ अपने लड़कों को एटेन नहीं भेजते थे।

यह स्कूल और स्कूलों से कई मामलों में बहुत भिन्न है।

यहाँ पर अन्य स्कूलों के समान एक निश्चित पाठ्यक्रम नहीं है और मन या बे-मन से हरेक को उसे पढ़ना पढ़ता है। एटेन में पढ़ने-वाले लड़के के लिए पढ़ने की, खेलनेवाले लड़के के लिए खेलने की तथा कला-कौशल सीखनेवाले लड़के के लिए उसी की जगह है। यहाँ पर पहले यूनानी और लैटिन भाषा, गणित, शरीर-शास्त्र और मनोविज्ञान की थोड़ी शिक्षा देदी जाती थी और उसके बाद यदि लड़का पढ़ना चाहे तो ख़ूब पढ़ता जाय, अगर खेलना चाहे तो खेलता ही रहे। स्कूल के कुछ क़ायदे बने हुए हैं, उसकी पाबन्दी करते रहने के अलावा और ज़्यादा कुछ नहीं करना पड़ता।

एटेन का सितारा

इसी मशहूर स्थान में-जिसका वायुमण्डल प्रत्येक दशा में एक महान होने योग्य आत्मा को बड़प्पन के साँचे में ढालने के लिए तैयार था और इसीलिए हमने ब्योरे-वार वर्णन देकर पाठकों को यह दिखलाने की कोशिश की है कि स्थिति का मनुष्य पर कितना प्रभाव पड़ता है— हमारे विलियम इवार्ट ग्लैडस्टन बचपन से ही बड़े पश्रिमी विद्यार्थी थे। परिश्रमी विद्यार्थी के लिए एटेन में पढ़ने की सुविधा का क्या पूछना है। कोरे साहित्य और व्याकरण से इनको रुचि न थी, किन्तु इतिहास, राजनीति तथा आर्थिक अवस्था इनकी वे पूरी जाँच-पड़ताल करते थे।

सबसे पहले इन्होंने लैटिन व यूनानी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। इस में उन्होंने बहुत परिश्रम किया। यूनानी राजनीतिज्ञ तथा दर्शन-पण्डितों के महान् विचारों को पढ़ते समय उसमें डूब जाना श्री ग्लैडस्टन के लिए साधारण बात थी।

पढ़ाई के बाद जो छुट्टी मिलती, उसमें ये गणितशास्त्र पढ़ा करते थे। इसके बाद विज्ञान और मनोविज्ञान की ओर इन्होंने ध्यान बढ़ाया। पढ़ने में इनका समय बहुत बीतता था; पर शारिरिक-उन्नति की ओर भी कम ध्यान नहीं दिया जाता था। ग्लैडस्टन अपने स्कूल भर में बड़े लड़ैत और कुश्तीबाज़ों में से थे। क्रिकेट और फुटबाल के खेल में इन्होंने बड़ा इनाम पाया और नाम पैदा किया था। इनके शरीर की गढ़न भी काफ़ी गठीली थी।

मशहूर महापुरुष सर रोडरिक मार्चसन ने लिखा है कि एटेन में जितने विद्यार्थी भर्ती हो चुके हैं ये उन सभी में सबसे सुन्दर थे। सचमुच में बात ऐसी ही थी। इनकी सुन्दरता बड़ी मशहूर थी और कम ही लड़के इतने ख़ूबसूरत होंगे। जवानी में ये अपने ज़माने के सभी-नौजवानों में ख़ूबसूरत थे और बुढ़ापे में सभी बूढ़ों से अच्छे मालूम होते थे। इसका कारण क्या है—एक तो ईश्वर ने सुन्दर गढ़ा था तथा दूसरे कसरत से इन्होंने अपनी तन्दुरुस्ती क़ायम रक्खी थी। बचपन से ही जो क़सरत शुरू की तो बुढ़ापे तक कुछ न कुछ जारी रक्खी। सुबह या छुट्टी के दिन पैदल टहलने की आदत

इनकी पुरानी थी और यह कसरत हमेशा इनका साथ देती रही ।

लड़कों के हँसी-मज़ाक से ग्लैडस्टन कभी ताल्लुक़ न रखते थे। किसी के मज़ाक उड़ाने या किसी को परेशान करने से इनको हमेशा नफ़रत थी। चरित्र इतना शुद्ध और निर्मल था, आदतें ऐसी गम्भीर और सज्जनता भरी थीं कि पढ़ाई-लिखाई में सभी इनका लोहा मान गये थे, इसका नतीज़ा यह हुआ कि एकदम छिछोरे लड़के भी इनसे भय खाते थे और इज्ज़त करते थे। विरोधी, शत्रु से भी अपनी इज्ज़त कराने की यह ताक़त ग्लैडस्टन में जन्म भर रही।

एटेन समिति में इनके व्याख्यान बहुत ज़ोरदार हुआ करते थे। इनके मित्रों का लिखना है कि जैसा व्याख्यान, जिस जोश के साथ इस समिति में दिया जाता था, उतना जोश पार्लामेंट के व्याख्यानों में नहीं दीखता था। इसी समिति की ओर से 'एटेनमिसेलनी' यानी 'एटन स्फुट प्रसन्न' नामक मासिक पत्र निकाला जाता था और इसके सम्पादक स्वयं ग्लैडस्टन थे। इस पत्र की विद्यार्थी बड़ी क़द्र करते थे और उसके सम्पादक की योग्यता उन्हें भली प्रकार मालूम हो गई थी।

विलायत में मशहूर होने पर भी ग्लैडस्टन को बाहरी सोहबत पसन्द न थी। इनके मित्रों की संख्या इनीगिनी थी और इनके अलावा ये किसी से मिलते-जुलते न थे। लार्ड टेनीसन अँग्रेज़ी में बहुत बड़े कविता करनेवाले माने जाते हैं।

अँग्रेज़ी-साहित्य में इनकी कविता को बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त है। इन्हीं की प्रसिद्ध रचनाओं में "इन मेमोरियम" (यादगार में) नामक एक काव्य-ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है। यह कवितायें "आर्थर हैलम" नामक एक अति योग्य मित्रकी मृत्यु पर उन्हीं की यादगार में लिखी गई थीं। आर्थर हैलम श्री ग्लैडस्टन के सहपाठी और परम मित्र थे।

सन् १८५७ में भारत में अँग्रेज़ी सल्तनत को उखाड़ फेंकने के लिए जो सिपाही-विद्रोह हुआ था, उस समय अर्ल (सरदार) कैनिंग भारत में गवर्नर जेनरल (बड़े लाट) थे। इसी बलवे के बाद अँग्रेज़ी सरकार ने भारत की हुकूमत ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से लेकर स्वयं महारानी विक्टोरिया के हाथ में देदी। उस समय से यहाँ के बड़े लाट 'वायसराय' यानी सम्राट् के प्रतिनिधि कहे जाने लगे। अर्ल कैनिंग प्रथम वायसराय थे—और यही कैनिंग—चार्ल्स कैनिंग श्री ग्लैडस्टन के मित्रों में से थे।

क्रिमिया की लड़ाई यूरोपीय इतिहास में एक अमर घटना है। इस अमर घटना को क्रमपूर्वक इतिहास के रूप में लिखने वाले और उससे अमर नाम और यश कमानेवाले अलेक्ज़ेण्डर किंगलेक भी इन्हीं के सहपाठी और निजी मित्रों में से थे।

इस प्रकार हमने देखा कि यह भावी महापुरुष ऐसे साथियों से मित्रता रखता था जिनमें स्वयं योग्यता और बड़प्पन की

निशानी हो। ग्लैडस्टन के मित्र भी एक से एक ज़बर्दस्त आदमी निकले। यह ज़रा देखने की बात है।

विद्या, बुद्धि, रूप, शक्ति तथा इज्ज़त में बढ़े-चढ़े ग्लैडस्टन में दया तो कूट-कूट कर भरी हुई थी। एटेन में हर साल 'राखी का बुधवार' नामक एक त्योहार होता था जिसमें मेला लगता था। इस मेले में सुअरों को तकलीफ़ देने का रिवाज़ सा था। एक बार ग्लैडस्टन इस बेरहमी को बर्दाश्त न कर सके और कुछ छोटे सुअरों को इन्होंने पीड़ा से बचा लिया। इस पर जब लड़कों ने मज़ाक़ उड़ाना शुरू किया और सुअरों को छीनना चाहा, तो इन्होंने इसका जवाब थप्पड़ों से दिया और इनके मज़बूत हाथों का थप्पड़ जिसके गाल पर बैठता उसकी तबियत हरी हो जाती। ग्लैडस्टन मूक पशुओं पर होने वाले अत्याचार को बर्दास्त नहीं कर सकते थे।

कालिज में

७ वर्ष में ही अर्थात् १८ वर्षकी अवस्था में ग्लैडस्टन ने एटेन की पढ़ाई समाप्त कर दी। एक वर्ष तक घर पर ही अध्यापकों से पढ़ते बीता और इन्हीं दिनों इन्होंने कसरत और घूमने का अभ्यास ख़ूब बढ़ा लिया। इनके कुटुम्ब में यह बहस उठ खड़ी हुई कि इन्हें पढ़ने के लिए ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में भेजा जाय या कैम्ब्रिज में। अन्त में ऑक्सफ़ोर्ड में ही क्राइस्ट-चर्च कालिज में भेजना निश्चित हुआ।

इङ्गलैण्ड में पुराने समय से ही दो विश्वविद्यालय मशहूर चले आ रहे हैं। संसार में सबसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में इनकी गणना है तथा इनकी पढ़ाई की बड़ी क़द्र है। यह हैं ऑक्सफ़ोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय। यहाँ पर हमें ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के क्राइस्ट-चर्च कॉलिज से मतलब है। यह कॉलिज अपने विद्यार्थियों को कितने ऊँचे दर्जे की शिक्षा देता है, इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि धनी से धनी और बड़े से बड़े सरदारों के लड़के यहीं पढ़ा करते थे। एक प्रकार से यह अमीरों व सरदारों का कॉलिज था। इस कॉलिज से कितने बड़े-बड़े आदमी निकला करते थे, इसका सबूत तो यही है कि उन्नीसवीं शताब्दी में ग्लैडस्टन को छोड़कर यहाँ के पढ़े हुए ७ महापुरुष बृटिश-साम्राज्य के प्रधान मंत्री हुए थे।

पढ़ाई के साथ ही साथ यहाँ की वादाविवाद सभा बृटिश-साम्राज्य भर में प्रसिद्ध है। प्रायः सभी बड़े प्रधान मंत्री और व्याख्याता यहीं से तैयार होकर निकलते थे। "यूनियन डिबेटिंग सोसाइटी" का महत्व बहुत अधिक था और जिसने यहाँ का लोहा लिया, वह संसार का लोहा ले सकता था।

इसके साथ ही एक बात और है। ऑक्सफ़ोर्ड 'टोरी' दल का अड्डा समझा जाता था। बृटेन में इस समय दो ही राजनीतिक दल थे—ह्विग व टोरी। ह्विग लिबरल या नर्म दल को कहते थे और उस समय इसकी शक्ति बड़ी कमज़ोर थी और यह उसी प्रकार उग्र दल समझा जाता था जिस प्रकार आजकल

मज़दूर दल। टोरी दल 'कांज़र्वेटिव' या अनुदार दल को कहते हैं और इसका सिद्धान्त उस समय बहुत ही शाहंशाहाना था। राज्य का शासन कुछ की बपौती समझी जाती थी। प्रजा का धर्म दुम दबाकर चुनाव के समय वोट देना व क़ानून का पालन करना माना जाता था। राजनीतिक सुधार तो बलवे से भी बढ़कर बुरी चीज़ समझे जाते थे। सरदार, ऊँचे ओहदे व पदों की प्रतिष्ठा दैवी व स्वर्गीय थी।

ऑक्सफ़ोर्ड के इसी वातावरण में १८२८ में ग्लैडस्टन ने प्रवेश किया। कॉलिज की पढ़ाई में इन्होंने कितना परिश्रम किया, यह केवल लिखने की नहीं, किन्तु समझने की भी बात है। इन्होंने हिब्रू भाषा भी यहीं पर पढ़ी और साहित्य तथा विज्ञान में पूरी धुन से लग गए। सोने के पहले कमसे कम, नित्य नियम पूर्वक दो घण्टे तक पढ़ा करते थे। पढ़ने के मामले में ये कभी भी ढीलापन न दिखलाते थे और सब काम छोड़कर अपना नित्य का पाठ समाप्त करते थे। मित्रों के विषय में भी वही हाल था कि केवल चन्द इने-गिने मित्रों को छोड़कर—जो सभी आगे जाकर बड़े आदमी निकले—कभी किसी का साथ न करते थे। शारीरिक-शिक्षा, कुश्ती, कसरत उसी प्रकार ज़ारी रही।

कॉलिज-प्रवेश के दूसरे ही वर्ष ग्लैडस्टन वादाविवाद सभा के मेम्बर हो गए। इसमें पहले दिन इन्होंने जो व्याख्यान दिया, वह इतना पसन्द किया गया कि उस समय के पार्लामेण्ट के मेम्बर तथा प्रधान-मंत्री ने यहाँ तक कह दिया—'यह आदमी

एक न एक दिन प्रधान-मंत्री ज़रूर होगा।' यह भविष्यवाणी कैसी सच निकली।

इसी वादाविवाद सभा के लिए ग्लैडस्टन ने बड़ा परिश्रम किया और इसको ख़ूब ऊँचा उठाया। ये इसके मंत्री हो गए और बाद को सभापति। इस पद को बड़ी योग्यता से इन्होंने सुशोभित कर रक्खा था।

उन दिनों के इनके व्याखानों के पढ़ने से हमें एक बड़ी निराशा होती है—और वह यह कि सुधार तथा राजनीतिक आज़ादी के विरुद्ध ग्लैडस्टन हमेशा रहा करते थे और पुराने 'टोरी' विचार इनके दिमाग़ में कूट कूट कर भरे रहते थे। उन दिनों इङ्गलैण्ड में राजनीतिक सुधार की बड़ी चर्चा थी। पर ग्लैडस्टन ने इनका घोर विरोध किया था। दास-प्रथाको दूर करने के लिए अन्दोलन हो रहा था। पर, ग्लैड-स्टन ग़ुलामी की प्रथा के पक्ष में थे, यद्यपि इनका यह कहना था कि धीरे-धीरे ग़ुलामों को सिखा-पढ़ा कर इस योग्य बना दिया जाय कि वे उपयोगी नागरिक बन सकें।

कालिज की वादाविवाद सभा से ही तबीयत न भरने के कारण इन्होंने अपनी एक वादाविवाद सभा ख़ुद खोली जो 'ऑक्स-फ़ोर्ड लेखन क्लब' कहलाता था। इसमें मेम्बर लोग पारी-पारी से एक-दूसरे के कमरे में जाते थे और वहाँ चुने हुए विषयों पर लेख पढ़ा जाता था। इस प्रकार लेखन का अभ्यास भी धीरे-धीरे बहुत बढ़ गया था।

इस प्रकार हमने देख लिया कि महाशय ग्लैडस्टन अपने अमूल्य समय का किस प्रकार सदुपयोग करते थे। इसमें से ज़्यादातर लोग अपना लड़कपन खेलने-कूदने में ही बिता देते हैं। खेलना-कूदना बुरी बात नहीं है—पर खेलने-कूदने के मानी अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करना नहीं है। ग्लैडस्टन के लिए खेल-कूद, नाव चलाना, बाग़ तथा खेतों में घूमना तथा क्रीकेट, फुट-बाल खेलना था। उस समय अमीरों के लड़के शराब बहुत पिया करते थे; पर, ग्लैडस्टन को इन सब बुराइयों से बड़ी नफ़रत थी। इनकी शराब इनकी किताबें थीं।

हम खेलने-कूदने का समय यदि तै करके, उस समय ख़ूब खेला करें और पढ़ने के समय, ग्लैडस्टन की तरह, दुनिया का सब काम छोड़कर पढ़ा करें, तो यह हमारे जीवन, हमारी उन्नति के लिए कितना सहायक हो। ग्लैडस्टन धनी थे, परन्तु इनमें अभि-मान नहीं था और इंग्लैण्ड में बड़ी इज़्ज़तवाले आदमी हो जाने पर भी इन्होंने अपने कालिज और स्कूल के सहपाठियों को हमेशा याद रखा।

शुरू से ही बाइबिल पढ़ने में इनका चित्त बहुत लगता था और धार्मिक-साहित्य की इन्होंने ख़ूब छान-बीन की। इसीलिए इनकी हार्दिक इच्छा थी कि, पादरी हो जायँ। किन्तु १८३१ में, २२ वर्ष की अवस्था में बड़े यश के साथ, ऊंचे नम्बरों से परीक्षा पासकर, जब यह कालिज से निकले तथा इस पेशे को अख़्तयार करना चाहा, तो, इनके पिता ने मना कर दिया। उन दिनों, आज-

कल की तरह, पिता की आज्ञा मानना या न मानना मामूली बात नहीं थी। ग्लैडस्टन के पिताने यह देख लिया था कि उनके पुत्र के लक्षण बड़े अच्छे हैं और उसकी उन्नति क्रमशः अवश्य होगी। इसलिए पादरी बनाना उचित न समझा गया—और पुत्र ने भी सादर पिता की आज्ञा मान ली।

आक्सफ़ोर्ड से निकलते ही, ग्लैडस्टन इटली चले गए। वहाँ की सैर ने इन्हें इतना मोहित कर लिया कि ये जीवन भर इटली की सहायता करते रहे।

ग्लैडस्टन ने बड़ा आदमी होने पर भी अपने स्कूल को—एटेन को नहीं भुलाया। एटेन के दिनों का ख़याल कर इनका हृदय भर जाता था।

जीवन-संग्राम का आरम्भ

इङ्गलैण्ड में उस समय टोरी दल की क्या नीति थी, यह हम बतला आए हैं। सुधार के नाम से कैसी चिढ़ थी, यह भी हमने बतलाया है। बड़े-बड़े सरदार अपनी रियासत को अपना राज्य समझा करते थे और अपनी प्रजा को अपना गुलाम। उनका कहना था कि, हम अपनी प्रजा से जिसे पार्लामेण्ट में चुनने के लिए कहदें, उसी को वह चुने। वह हमारी रियासत में हैं, इसलिए वह 'मेरी है' और 'मेरा उस पर सब कुछ हक़ है।'

किन्तु १८३२ में बृटिश राजनीतिमें वह क़ानून पास हो

गया जिसने यकायक तूफ़ान मचा दिया था। यह था सुधार-क़ानून। इस क़ानून के मुताबिक सरदारों का यह अधिकार छिनता सा दीख पड़ा क्योंकि मध्य श्रेणी के लोगों को भी वोट देने का अधिकार मिल गया था और बहुत से रियासती निर्वाचन क्षेत्र तोड़ दिए गए थे। यद्यपि इससे वोटरों की तादाद कुछ बढ़ी नहीं और साधारण जनता की आवाज़ वैसे ही दबी पड़ी रही, पर यह क़ानून अनुदारों की बर्दाश्त के बाहर था।

इङ्गलैण्ड में शासन कैसे होता था तथा है, यह हम पहले बतला दें। इङ्गलैण्ड में आयरलैण्ड (जो अब आधा आज़ाद है) और स्काटलैण्ड भी शामिल थे और इन तीनों को मिला कर ग्रेटब्रिटेन कहलाता था। यह एक महाराज के आधीन था और है भी। दुनिया भर में चारों ओर इनका राज्य फैला हुआ था। व्यापार करने के लिए अँगरेज़ घर से निकलते थे; पर, जहाँ जाते थे वहाँ अपना राज्य बना आते थे। इन के ऊपर भी बृटिश महाराजा की हुकूमत होती थी इसी कारण यह सम्राट् या शाहंशाह कहलाते थे। लेकिन, बृटिश शाहंशाह पार्लामेण्ट की राय के विरुद्ध काम नहीं करते। पार्लामेण्ट दो सभाओं को मिला कर कहते हैं, जो सरदारसभा यानी हाउस आव लार्ड्स और साधारणसभा यानी हाउस आव कामन्स कहलाते हैं। सरदारसभा में–सभी पुश्तैनी या नये–सम्राट्-द्वारा बनाये गए सरदार सभासद होते हैं, पर साधारण सभा का

हमारे यहाँ की म्युनिस्पैल्टी और कौंसिलों की मेम्बरी की तरह चुनाव होता है। देश को बहुत से टुकड़ों में, या निर्वाचन-क्षेत्रों में बाँटा जाता है जहाँ से आदमी चुने जाते हैं। राय देनेवालों की फ़ेहरिस्त होती है और उसके लिए कुछ शर्तें होती हैं। आजकल साधारण सभा जिस बात को तै कर देती है उसके ख़िलाफ़ जाने की सरदारसभा को हिम्मत नहीं पड़ती। पर उन दिनों सरदारसभा की बड़ी ताक़त थी। सरदार लोग ही असल में राज्य का शासन करते थे। आजकल २२ वर्ष की अवस्था के ऊपर सभी स्त्री-पुरुषों को राय देने का हक़ है। उन दिनों अच्छी आमदनीवाले साधारण आदमियों को भी कोई न पूछता था। जो हो, साधारण सभा में जिसकी बात माननेवाले ज़्यादा होते थे, जिसकी ओर अधिक लोकमत रहता था, वही प्रधानमंत्री चुना जाता था। यही प्रधान मंत्री बृटिश-साम्राज्य में सबसे इज्ज़त तथा ज़िम्मेवारी का पद होता था। सम्राट् तो प्रजा की राय पर चलने वाले थे—इसलिए प्रधान मंत्री, जिसके संग साधारण सभा में ज़्यादा लोग साथ देने वाले होते थे, असल में साम्राज्य का राजा-या-शासक होता था। इससे बड़ा केवल सम्राट् था। जब साधारण सभा में इसके साथी कम हो जाते और विरोधीदल की जीत हो जाती और वह किसी बात में इनको सभा में हरा देता, तब वह इस्तीफ़ा दे देता और उसी विरोधी दल का अगुआ सम्राट्-द्वारा प्रधान मंत्री बनाया जाता।

अस्तु, हमने देख लिया कि उस समय इङ्गलैण्ड की क्या हालत थी और इसकी शासन-प्रणाली क्या थी। जब नये विचार वालों की १८३२ में विजय देखी गई तो पुराने ख़याल के 'टोरी' बहुत घबराये और उन्होंने इस लहर को रोकने के लिए, 'पुराने विचार के' उन्नति-शील नौजवानों की तलाश की। उन्हीं में न्यूकैशल के ड्यूक (सरदार) भी थे। "निवार्क" का निर्वाचन-क्षेत्र उन्हीं की ज़मींदारी में था और अपनी प्रजा को उन्होंने इतना जकड़ रक्खा था कि उसकी क्या हिम्मत जो उस आदमी को राय न दे, जिसे वे खड़ा करें। ड्यूक को एक ऐसे ही 'सुधार-विरोधी' नौजवान की ज़रूरत पड़ी जिसे इसी क्षेत्र से खड़ा कराया जा सके।

ड्यूक के पुत्र लार्ड लिंकन मि० ग्लैडस्टन के सहपाठी तथा मित्रों में से थे। उन्होंने उनकी 'सुधार-विरोधिनी' वह स्पीच, तथा सुधार-आन्दोलन को बलवे से भी बुरा बतलानेवाला वह व्याख्यान सुना था और इसीलिए अपने पिता से इन्हीं को खड़ा करने की शिफ़ारिश की। इसी शिफ़ारिश के कारण ग्लैडस्टन इटली से उस पद को सुशोभित करने के लिए बुलाये गए जो बृटिश-साम्राज्य में इतनी लालच, इतनी डाह तथा जलन से देखा जाता है। पार्लामेण्ट की मेम्बरी, इस कम उम्र में, कालिज से निकलते ही मिल जाना मामूली बात नहीं है।

श्रीगणेश

आगे चलकर, ग्लैडस्टन को हम इङ्गलैण्ड के नवीन-युग तथा नवीन विचारों का स्वयं प्रकाश वा पैग़म्बर पावेंगे—पर, उस समय यही व्यक्ति सुधार तथा उन्नति के शत्रु की हैसियत से, सुधार क़ानून बनने के बाद, आम चुनाव में, 'प्रथम सुधार प्राप्त पार्लामेण्ट का' मेम्बर सबसे ज़्यादा वोट से हो गया। अपने व्याख्यानों में इस अमीर ने ग़रीबों की दुर्दशा का ज़िक्र तथा उन्हें अधिक मज़दूरी मिलने का ज़िक्र ज़रूर किया था तथा ज़ोरों के साथ देश के शासकों को धर्म के साथ अपना काम करने की सलाह दी थी, पर ग़ुलामी की प्रथा को 'धर्म-शास्त्र' द्वारा उचित बतलाया! यद्यपि, ग़ुलामों को पढ़ा-लिखाकर सुयोग्य बनाने की भी सलाह दी।

ग़ुलामी-प्रथा का अन्त सुधार-क़ानून ने कर दिया था। पर इसको हटाने के प्रति ग्लैडस्टन-परिवार की घृणा उचित हो सकती है। अँग्रेज़ संसार में जहाँ खेती आदि के लिए बस गए थे, इन्होंने अपने लाभ के लिए ग़ुलाम रख छोड़े थे तथा इनका ख़ून, पसीना करके, मिहनत कराते और ख़ुद लखपती बने जा रहे थे। ग्लैडस्टन-परिवार की भी बहुत सी ज़मीन 'वेस्ट इण्डीज़ के' टापू में थी और इसमें इन्होंने हज़ारों ग़ुलाम लगा रक्खे थे। सरकार ने ग़ुलामी-प्रथा का अन्त करके खेत के मालिकों को रुपया भर कर उनके ग़ुलामों को

आज़ाद कर दिया था। इससे मालिकों का बहुत बड़ा नुक़सान हुआ था।

ग्लैडस्टन "टोरी" दल की ओर से साधारण सभा में बैठ गए। इन्हें क्या मालूम था कि उन्हीं के सामने उन्नति, उत्थान, उद्यम तथा उत्साह का समर्थक जो दल बैठा है, उसीके एक दिन वे नेता हो जायँगे तथा जो उनके आज परम साथी हैं, इन्हें उन्हीं की शत्रुता उठानी पड़ेगी। जिस समय ग्लैडस्टन सार्वजनिक कार्य-क्षेत्र में उतर पड़े, उस समय ऊँचे से ऊँचे पदवालों से इनकी मित्रता थी—इसलिए इनका उन्नति का रास्ता खुला हुआ था।

पार्लमिएट में पहले दिन

श्रीग्लैडस्टन के पार्लमिएट में प्रवेश करने के समय उसकी बड़ी अजीब हालत थी। इसका एक कारण है; वह यह कि उस समय सुधार-क़ानून नया-नया पास हुआ था। लिबरल दल की जीत हो गई थी और उसी के हाथ में मंत्रि-मण्डल था। अब तो ऐसा रिवाज़ हो गया है कि साधारण-सभा का मेम्बर ही प्रधान मंत्री हुआ करे क्योंकि साधारण सभा में जिसके साथी ज़्यादा रहते हैं वही प्रधान मंत्री होता है—इसलिए वहीं उसकी सेना हुई। अब यदि वह अपनी सेना से ही दूर रहे और उसके दुश्मन उसको जली-कटी सुनाते रहें तो कौन पूरी तरह उसका जवाब दे सके।

प्रधान-मंत्री सरदार सभा की बैठकों में मिलें या न मिलें—और इन दो सभाओं का जो मेम्बर नहीं है वह तो यह पद ग्रहण ही नहीं कर सकता। इसीलिए प्रधान-मंत्री तो एक नाम की चीज़ हुई और असली ज़िम्मेदार आदमी वह हुआ जो मंत्रि-मण्डल में भी हो और प्रधान-मंत्री की ओर से सरकार की हरेक बातों का जवाबदेह रहे और साधारण-सभा का मेम्बर हो। ग्लैडस्टन के समय में अर्ल ग्रे प्रधान-मंत्री थे। पर वे सरदार होने के कारण "साधारण" सभा में न बैठ सकते थे और सरकारी पक्ष का ज़िम्मेदार मंत्री साधारण-सभा में लार्ड एलथोर्व नामक सुयोग्य राजनीतिज्ञ था।

पाठकों का सन्देह हो सकता है कि एलथोर्प भी तो लार्ड यानी सरदार थे, इसलिए वे क्यों साधारण-सभा में बैठते थे। इसका एक कारण था। सरदार की हैसियत असल में उन्हीं की मानी जाती थी जो पुस्तैनी सरदार हों या जिनको कृपाकर सम्राट् ने सरदार बना दिया हो। एक बार सरदार हो जाने पर पिता के बाद उनका ज्येष्ठ पुत्र ही यह उपाधि ग्रहण करता था। इस कारण जबतक पिता ज़िन्दा रहता तबतक पुत्र लार्ड होने पर भी असली लार्ड नहीं समझा जाता था। इसी कारण लार्ड एलथोर्प साधारण-सभा के मेम्बर रहे। उनके पिता के मरने पर वे पूरी तरह सरदार हो गए तथा उन्हें मेम्बरी छोड़नी पड़ी और उनके स्थान पर सरकारी पक्ष से लड़नेवाले कोई ख़ास आदमी न रहे।

ग्लैडस्टन के समय दोनों सभाओं में बड़े योग्य-योग्य आदमी थे। सरदार-सभा में 'टोरी' दल के अगुआ, फ्रांस के विश्व-विजयी सम्राट् नेपोलियन को वाटरलू की मशहूर लड़ाई में हरानेवाले, वेलिंगटन के ड्यूक थे। आप कोई बड़े राजनीतिज्ञ न थे, पर उनकी विजय ने उनको बड़ा यश और नाम दे रक्खा था। लिबरल-दल के सिरताज तथा अत्यन्त प्रसिद्ध वक्ता लार्ड ब्रौघम भी उस समय मेम्बर थे; जिनकी वाणी से सभा-भवन में झंकार उठा करती थी। उनके ही समान, यद्यपि वाणी की मिठास में कुछ कम, सुयोग्यवक्ता लार्ड लिंडहर्स्ट थे। ये दोनों ही 'लार्ड चांसलर' नामक प्रसिद्ध पद पर रहने के कारण लार्ड बनाये गए थे और सरदार-सभा के मेम्बर थे। लिंडहर्स्ट "टोरी" दल के थे। इधर साधारण-सभा में, 'डेनियलओ' कोनेल तथा सर राबर्ट पील ऐसे ज़ोरदार मेम्बर थे।

सर राबर्ट पील कम संख्यावाले अर्थात् साधारण-सभा में थोड़ी तादादवाले 'टोरी' दलके अगुआ थे। सुधार-क़ानून ने ग़ुलामी-प्रथा को अन्त करने का बीज बो ही दिया था। अब मि० स्टैनली, जो सरकार के उपनिवेशों के लिए मन्त्री थे, ने यह प्रस्ताव अन्तिमरूप से पेश किया कि उपनिवेशों में (उपनिवेश उन्हें कहते हैं जहाँ अँग्रेज़ जाकर बस गए हों, यह भारतीय उपनिवेश, फ्रांसीसी उपनिवेश सभी होता है। उपनिवेश अर्थात् जो मातृ-भूमि न होकर भी निवास की जगह हो, वह उपनिवेश कहलायगा। भारतीय उपनिवेश फ़िज़ी, मिर्च

देश, कनाडा आदि में है) से .गुलामी-प्रथा एकदम उठा दी जाय।

एक व्याख्यान देनेवाले ने ग्लैडस्टन की .गुलामों के साथ ज़्यादती का वर्णन किया था। ग्लैडस्टन को प्रथम बार अपने पिता को कलङ्क से बचाने के लिये बोलना पड़ा और आप बहुत सम्हल कर बोले। साधारण-सभा नौजवानों को हमेशा बढ़ावा देती थी तथा नये आने-वालों की बातें हमदर्दी से सुना करती थी। इनका व्याख्यान भी हमदर्दी से सुना गया और इन्हें व्याख्यान में यदि असफ-लता न मिली तो सफलता भी विशेष न मिली। पार्लि-मेण्ट में पहला व्याख्यान ही .खूब जोश के साथ देनेवाला आदमी बहुत ऊँची निगाह से नहीं देखा जाता। लोग उसे केवल 'भड़भड़ाने' वाला समझ बैठते हैं और ग्लैडस्टन के लिए भी यही बात थी।

शुरू में इनको देखकर किसी ने यह नहीं समझा कि यह आदमी इतना ऊँचा उठेगा। पार्लामेन्ट में इनका विरोधी-इनके विरोधी दल का अगुआ तथा कई बार इन्हें हराने-वाला महापुरुष-डिसरायेली जब इनसे कुछ महीने बाद मिला (उस समय वह पार्लामैण्ट का मेम्बर न था) और इनसे बात करने के बाद अपनी बहन को उसने एक पत्र लिखते हुए इनके बारे में बतलाया था—'यह आदमी बड़ा

साधारण मालूम देता है और इसके अधिक उन्नति करने के लक्षण नहीं दिखलाई पड़ते ।

इस धारणा के बिलकुल विपरीत धारणा अगर किसी की थी तो वह टोरी-दल के नेता सर राबर्ट पील की थी । पील महोदय ने इस नौजवान के गुण को समझ लिया था। वे इस बात को समझ गये थे कि यह बड़ा चतुर और सुयोग्य युवक है। एक बात तो साफ़ थी और वह यह कि यह पुरुष और बहुत से मेम्बरों की तरह बातूनी न था। यह उसी समय बोलने के लिए खड़ा होता जब कोई बात कहनी ज़रूरी होती। इस समय भी थोड़े शब्दों में अपनी बात कह देना और बस, चुप हो जाना, यही इसका काम था। इस कारण सभा पर इसका बड़ा रोब जम गया था। लोग समझ गये थे कि यह तभी बोलने के लिए खड़ा होगा जब कोई बात कहनी होगी न कि व्यर्थ का गुल मचाने के लिए। एक थोड़ी उम्र के जवान का बड़े-बड़े शानदार बुड्ढों पर इस प्रकार रोब जमा लेना यह कोई साधारण बात न थी। सर राबर्ट पील ने इस आदमी का भविष्य समझ लिया और अपने कामों में इनको दाहिना हाथ बना लिया।

उधर ड्यूक आव विलिंगटन ने, सरदारों के नेता ने, जिनमें केवल सैनिक योग्यता थी पर, राजनीतिक दूरदर्शिता नहीं थी, सर पील को अपना दाहिना हाथ बनाया था और उसी पील के दाय हाथ धीरे-धीरे ग्लैडस्टन हो गए। इस प्रकार इतनी छोटी अवस्था में कितने महत्त्वपूर्ण पद पर यह शेर पहुँच गया।

सर पील की निगाह ग्लैडस्टन की ओर फिरने का एक और भी कारण था। ग्लैडस्टन को हिसाब-किताब से बड़ा प्रेम था। किसी देश की राजनीतिक स्थिति समझने के लिए ये उस देश की जन-संख्या, आमदनी आदि का हिसाब लगाते थे। एक धनी-व्यापारी-कुल में उत्पन्न होने के कारण हिसाब-किताब में बहुत होशियार थे। इस प्रकार का हिसाब-किताब बड़े परिश्रम की चीज़ समझी जाती है और जो राजनीतिज्ञ इस परिश्रम को पसन्द करता है, उनकी ओर लोगों की नज़र बहुत जल्दी उठती है।

राजनीतिक स्थिति

ग्लैडस्टन के प्रथम पार्लामेण्ट के समय में कई बातें बड़े महत्व की हुईं। इनमें एक तो उपनिवेशों से दासता का नाश था, दूसरा आयरलैण्ड में नित्य प्रति स्वाधीनता के बढ़ते हुए आन्दोलन दबाने के लिए क़ानून का बनना था। इङ्गलैण्ड की यह पुरानी नीति है कि पराधीन राज्यों को दबाकर, पीड़ा देकर, अपने काबू में रखना और जहाँ तक पराधीन देशों से व्यवहार का सम्बन्ध आता है वहाँ का बड़े से बड़ा परोपकारी रूखे से रूखा आदमी हो जाता है और ग्लैडस्टन भी इस रुखाई से उलटे थे, यह कहना झूठ बोलना होगा।

उन दिनों अँग्रेज़ी शासन के इतिहास में एक ऐसी बात हुई जो फिर तब से कभी नहीं की जा सकी। यह हम बतला आए हैं कि प्रधान-मंत्री वही चुना जाता है जिसके साथी साधारण सभा में ज़्यादा होते हैं। पर प्रधान-मंत्री को निकालने का क़ानूनी अधिकार बादशाह को है, क्योंकि वही उसको रखता है। पर प्रजा जिसके साथ ज़्यादा होती है, उसके साथ ऐसा नहीं किया जाना चाहिए और क़रीब सौ वर्ष के हो चले अँगरेज़ी बादशाहों ने तबतक प्रधान-मंत्री को नहीं हटाया है जबतक साधारण-सभा उनके साथ रही है और उसने उनको इस्तीफ़ा देने के लिए मजबूर नहीं कर दिया है।

ग्लैडस्टन के प्रथम पार्लामेन्टरी जीवन के समय विलियम चतुर्थ बृटेन की गद्दी पर थे। बुढ़ौती में तो इन्हें गद्दी मिली थी और इसके पहले ये सरदार सभा में बैठते रहे। उन दिनों-राज्यारोहण के पहले, सुधार के विरुद्ध प्रचार में सहायता देने तथा ग़ुलामी-प्रथा न उठाने के लिए ज़ोर देने के कारण जनता में वे बहुत बदनाम हो चुके थे। सरदार-सभा की बैठकों में ये गाली-गलौज तक कर बैठते थे। पर गद्दी पर बैठने से कुछ ज़िम्मेदारी आ गई; परन्तु और कोई अच्छाई न आई। ख़ान्दान एक होने के कारण इङ्गलैण्ड का राजा हैनोवर नामक जर्मन रियासत का भी राजा होता था, यह बात इङ्गलैण्ड वालों को बहुत नापसन्द थी; पर बिचारे करते क्या? अतः बादशाह विशेष लोक-प्रिय न थे—और इन्होंने इसी समय,

प्रजापक्ष की फुटमत देखकर सबसे बुरा काम यह किया कि उदार दल—लिबरलों को शासन से हटा दिया और मंत्रियों को निकाल दिया। बादशाह द्वारा मंत्रियों के निकाले जाने का यह अन्तिम उदाहरण है।

उदार मन्त्रिमंडल के हटाये जाने पर 'टोरी' दल का मंत्रिमण्डल बना। पुराने खूसटो विचारों के नेता ड्यूक आव वेलिंगटन को प्रधान-मंत्री बनने के लिए बादशाह ने कहा। इन्होंने सर राबर्टपील की सहायता के बिना कुछ करना नामंज़ूर कर दिया। इसलिए सर राबर्टपील से कहा गया और वेलिंगटन के नाम पर सर राबर्टपील ने मंत्रिमण्डल बनाया। कुछ लोग अपनी आँख से नहीं, दूसरों की आँख से देखते हैं। वेलिंगटन पील की आँखों देखा करते थे। पील ग्लैडस्टन की योग्यता जानते थे और उन्होंने इनको उप-कोषाध्यक्ष (खजाने का छोटा मालिक) बनाया।

सरकारी पद

उप-कोषाध्यक्ष के पद पर ग्लैडस्टन थोड़े ही समय रहे और जल्दी ही उपनिवेशों के लिए उप-मंत्री बना दिये गए। लार्ड एबरडीन मंत्री थे और वे सरदार-सभा में रहते थे। उपनिवेशों में उस समय हलचल सी मची हुई थी। नई-नई जगहें अँग्रेज़ कब्ज़े में लिए चले जा रहे थे और उधर जर्मन व फ्रांसीसी भी पहुँच रहे थे। इस कारण यह प्रश्न महत्त्व का था। मंत्री महो-

दय सरदार—सभा में थे इस कारण ग्लैडस्टन को ही विरोधी दल—अब तो उदार-दल विरोधी-दल हो गया और टोरी दल सरकारी-दल—के सवालों, आक्षेपों तथा विरोधों का जवाब देना पड़ता था। यह काम ग्लैडस्टन बड़ी योग्यता से किया करते थे और लार्ड एबरडीन से इनकी जो घनिष्टता बढ़ गई वह आगे चल कर बहुत काम आई।

किन्तु, यह मंत्रिमण्डल अधिक दिन तक न चल सका। साधारण-सभा में लार्ड जॉन रसेल (उदार-दल) का यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया कि आयरलैंड के सरकारी गिर्जाघर की माली हालत और उसकी ज़मीन-जायदाद की जाँच की जाय। मंत्रिमण्डल यह जाँच कराना नहीं चाहता था और इसे अपने ऊपर अविश्वास समझता था। उसने विरोध किया और जब हार गया तब इस्तीफ़ा दे दिया और पुनः उदार-दल का राज आरम्भ हो गया—यानी उन्हीं का मंत्रीमण्डल भी बन गया—और ड्यूक आव मेलबोर्न प्रधान मंत्री हुए।

घोर-परिश्रम

इस आनन्द-विनोदका यह अर्थ नहीं है कि ग्लैडस्टन बेकार थे। ये घोर-परिश्रम किया करते थे। पार्लमेण्ट में स्थानीय क़ानून बनाने के लिए जो बहुत सा बातें पेश होतीं वे ज़्यादातर एक समिति के सुपुर्द कर दी जातीं, जो उन पर विचार करके अपनी रिपोर्ट दे देती और तब वे सभा के

सामने आतीं। इन कमेटियों में जो मेम्बर बना दिया जाता, (ये मेम्बर साधारण-सभा या सरदार-सभा के मेम्बरों में से ही बनाये जाते हैं) उसको अपने कामके लिए भत्ता ज़रूर मिलता पर ठीक ग्यारह बजे दिनको, जब से कमेटियों की बैठक शुरू होती, उसमें शामिल हो जाना पड़ता और उनमें ४ बजे शाम तक काम करना पड़ता। यदि वह आधे दिन के लिए भी ग़ायब होता तो उसे लिखकर इसका सबब बतलाना होता—पार्लामेण्ट की बैठक में, सभापति से आकर कहना होता था और कभी-कभी झिड़कियाँ भी सुननी पड़ती थीं। चार बजे पार्लामेन्ट की बैठकें शुरू होती थीं और उन दिनों रात भर—सुबह पाँच बजे तक बैठी रहती थीं। इस कारण बेचारे मेम्बर को ग्यारह बजे दिन से ५ बजे दिन तक लगातार काम करना पड़ता था और ६ घण्टे बाद फिर काम में लग जाना पड़ता था।

ग्लैडस्टन को हिसाब-किताब में रुचि थी। इसलिए ये कमेटियों के मेम्बर हो जाते। इस कारण इनका समय बड़े परिश्रम से बीतता था। अवकाश के समय मित्रों से ही .फ़ुर्सत न मिलती थी।

विलियम चतुर्थ वृद्ध थे ही। उनकी मृत्यु हो गई। प्रजा ने बड़ी धूम-धाम से उनको दफ़नाया। उनमें जो भी अवगुण रहे हों, किन्तु, प्रजा अपने राजा को केवल राजा होने के कारण ही प्यार करती थी। प्रजा शीघ्र

ही विलियम को भूल गई। उसके लिए एक ऐसी महारानी मिल गई जो उम्र में कम होने पर भी बड़ी लोक-प्रिय हो गई थीं तथा जिसके गद्दी पर बैठने से इङ्गलैण्ड और हेनोवर का सम्बन्ध टूट गया। औरत होने के कारण महारानी विक्टोरिया को हैनोवर नामक जर्मन-रियासत की गद्दी न मिली और वह शुद्ध इङ्गलैण्ड की ही महारानी रहीं। अँग्रेज़ी प्रजा इससे बड़ी प्रसन्न हुई।

उस समय ऐसा क़ायदा था कि नये राजा के गद्दी पर बैठने पर पार्लामेण्ट भङ्ग कर दी जाती और फिर से उसका चुनाव होता था। इस कारण महारानी विक्टोरिया के गद्दी पर बैठते ही फिर से चुनाव हुआ। उस समय तक ग्लैडस्टन ने काफ़ी यश पैदा कर लिया था और टोरी दल पार्लामेन्ट में इनकी ज़रूरत समझ चुका था। ये दो स्थानों से, निवार्थ और मैन्चेस्टर से मेम्बरी के लिए खड़े कराये गए। निवार्क में इनकी जीत हो गई पर मैंचेस्टर में हार गये।

इस प्रकार नई पार्लामेण्ट में भी ग्लैडस्टन मेम्बर हो गये। किन्तु, मन्त्रिमंडल पुराना ही रहा। मेलवोर्न ही प्रधान-मन्त्री रहे और उदार (लिबरल) दल का ही शासन रहा।

राज्य-धर्म

राजनीति तथा साहित्य में ही ग्लैडस्टन की गति न थी। हम पहले ही बतला चुके हैं कि शुरू से ही धर्म की ओर इनका

बहुत झुकाव था। इनका कहना था कि, राज्य का एक धर्म होना चाहिए। राज्य की एक आत्मा होना ज़रूरी है और उस आत्मा का एक राज्य-धर्म होना चाहिए। इङ्गलैण्ड का गिर्जाघर इङ्गलैण्ड का धर्म बतलाने के लिए काफ़ी था और उसी गिर्जाघर को उसका धार्मिक नेता बनाना चाहिए जिससे हर मामले में धार्मिक सलाह ली जाया करे। इन्हीं बातों को 'राज्य तथा गिर्जे का सम्बन्ध' नामक पुस्तक में इन्होंने लिखा और उसे प्रकाशित किया।

इस पुस्तक के प्रकाशन से ग्लैडस्टन का नाम चारों ओर फैल गया। इसमें लिखी बातें विचारणीय थीं। यह राजनीति का एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि राज्य का कोई धर्म होना चाहिए अथवा नहीं, सरकार का कोई धर्म हो अथवा न हो और वह प्रत्येक मामले में धार्मिक सलाह लिया करे अथवा नहीं, इसके विरोध में बहुत सी बातें कही जा सकती हैं। राज्य का अगर एक धर्म होगा तो प्रजा को भी उसका पूर्णतया पालन करना ही होगा। यदि वह पालन नहीं कर रही है, तो अपराध कर रही है क्योंकि राज्य का नियम सब के लिए एक साँ होता है और उसका अपालन अपराध है। पर इस सिद्धान्त से 'धार्मिक स्वाधीनता' का तो सिद्धान्त ही नष्ट हो जायगा। सभ्यता के मानी यह हैं कि हरेक आदमी को, हक़ है कि वह जैसा चाहे, धार्मिक विचार रक्खे। जिस पैग़म्बर को मन हो पूजे। पर, जब राज्य कहेगा कि फ़लाना

गिर्जाघर ही आदर्श है, और उसी की आज्ञा सब को माननी पड़ेगी तो लोगों की आत्मा पराधीन हो जायगी।

विवाह और पद-वृद्धि

ग्लैडस्टन को मोमबत्ती से पढ़ने की धुन थी। इन्हें लिखने-पढ़ने का काम बहुत करना पड़ता था, इस कारण नेत्रों में कुछ कमज़ोरी सी आ गई थी। डाक्टर ने स्वास्थ्य के लिए कुछ दिन तक विश्राम करने की सलाह दी।

ग्लैडस्टन ने यूरोप के दक्षिणी भाग में अपनी प्यारी इटाली को ही जाना उचित समझा और तदनुसार वे रोम चले गए। उन दिनों रोम नगर में हावार्डेन के स्वर्गीय सर स्टेफ़न रिचार्ड ग्लाइन की विधवा अपनी कन्याओं के साथ आबहवा बदलने के लिए आई थीं। उनके एक ही पुत्र था। सर स्टेफ़न ग्लाइन इनके पुत्र हावार्डन में ही थे। कॉलिज में उनका और ग्लैडस्टन का साथ रह चुका था और ग्लैडस्टन उनके घर पर भी हो आए थे।

रोम में इस परिवार से इनकी घनिष्ठता बढ़ गई और बड़ी लड़की से इनका प्रेम हो गया। बड़ी लड़की, कुमारी कैथराइन ग्लाइन बड़ी रूपवती थीं। उनके रूप की प्रशंसा पुस्तकों में मिलती है। कुमारी ग्लाइन से १८ जुलाई १८३९ को, हावार्डन के क़िले में ग्लैडस्टन का विवाह हो गया।

विवाह की दृष्टि से यह शादी पहले नम्बर की हुई। पुरुष

ओर स्त्री दोनों एक से एक बढ़कर रूपवान् थे। कुमारी कैथरा-
इन की शि...
तो ये ब...
घर को ...
मामलों ...

ग्लैड...
गए। दो...
हेनरी ग्लै...
था। दो...
दुर्भाग्य से...
छोटा जी...
कम योग्य...
वह इसमें...

लिबर...
था। तीन ...
मुश्किल थ...
थी और ख़...
का टोटा र...
में, सरकारी पक्ष की ओर से, लार्ड जॉन रसेल ने यह प्रस्ताव
किया कि कर कुछ बढ़ा दिये जायँ। पर सर राबर्ट पील तो

गिर्जाघर ही आदर्श है और उसी की आज्ञा सब को माननी

हैं लिखने-

ों में कुछ

लिए कुछ

री इटाली

ले गए।

न रिचार्ड

ा बदलने

न ग्लाइन

ग्लैडस्टन

र भी हो

ाई और

री कैथ

प्रशंसा

२५ जुलाई १८३९ को, हावर्डन के क़िले में ग्लैडस्टन का विवाह हो गया।

विवाह की दृष्टि से यह शादी पहले नम्बर की हुई। पुरुष

और स्त्री दोनों एक से एक बढ़कर रूपवान् थे। कुमारी कैथराइन की शिक्षा ऊँचे दर्जे की हुई थी और गृहस्थी के मामले में तो ये बड़ी होशियार थीं। इन्होंने अपनी योग्यता के कारण घर को इस प्रकार सम्हाल रक्खा था कि ग्लैडस्टन को घरेलू मामलों की लेशमात्र भी चिन्ता न करनी पड़ती थी।

सन्तान

ग्लैडस्टन के कई लड़के-लड़कियाँ हुए। इनमें कई तो मर गए। दो लड़के बड़े योग्य निकले। बड़े का नाम विलियम हेनरी ग्लैडस्टन तथा छोटे का विलियम हर्बर्ट ग्लैडस्टन था। दोनों ही एक साथ पार्लामेन्ट के मेम्बर हुए थे। दुर्भाग्य से बड़ा लड़का ग्लैडस्टन के सामने ही मर गया पर छोटा जीवित रहा और उसीसे वंश चला। यह पुत्र पिता से कम योग्य न था परन्तु ऊँचा उठने के लिए जो प्रतिभा चाहिए, वह इसमें न थी।

लिबरल दल की हार

लिबरल दल का शासन इस समय गड़बड़ हो रहा था। तीन वर्ष तक तो यह नाव खे लाए पर अब आगे बढ़ना मुश्किल था। सरकारी आमदनी दिन व दिन घटती जा रही थी और ख़र्च बढ़ता चला जा रहा था। तीसरे वर्ष २० लाख पौंड का टोटा रहा। इस घाटे को पूरा करने के लिए, साधारण-सभा में, सरकारी पक्ष की ओर से, लार्ड जॉन रसेल ने यह प्रस्ताव किया कि कर कुछ बढ़ा दिये जायँ। पर सर राबर्ट पील तो

लिबरल दल को गिराने की तरकीब सोच ही रहे थे। इसलिए इन्होंने हमला करने का यही मौक़ा ठीक समझा।

सर पील ने कर बढ़ाने का घोर विरोध किया। 'रुपये-पैसे का इन्तज़ाम ठीक न रख सकने के कारण लिबरल सरकार में अविश्वास' का प्रस्ताव इन्होंने पेश कर दिया और वह एक ज़्यादा वोट से पास हो गया।

अब लिबरलों के लिए केवल दो उपाय थे। इस्तीफ़ा दे देना या पार्लमेएट को भङ्ग कर नया चुनाव कराना और उसमें देखना कि देश किसके साथ है। १८४१ में पार्लमेएट भङ्ग हो गई और फिर से चुनाव हुआ। ग्लेडस्टन इसमें भी अपने पुराने निर्वाचन-क्षेत्र निवार्क से चुन लिए गए।

जनता यह नहीं देखती कि किसके विचार उदार हैं, किसके विचार खूसट हैं। वह तो यह देखती है कि तत्काल उसको क्या लाभ होता है। जब उसके सामने टोरी-दल ने यह बात रक्खी कि उदार-दल कर बढ़ाना चाहता है तब उसने उदार-दल की ओर से मुँह फेर लिया और अधिक संख्या में टोरी-दल के आदमी ही चुने गये।

उस समय यह क़ायदा था कि, अविश्वास का प्रस्ताव हो जाने पर भी, पार्लमेएट का नया चुनाव हो जाने पर भी, मंत्रि-मण्डल जबतक नई-सभा का रुख़ नहीं देख लेता था, तबतक इस्तीफ़ा नहीं देता था। लिबरल-दल ने भी यही किया। जब पार्लमेएट चुन ली जाती है तब जो दल शासन करता रहता है

वह अपनी नीति के अनुसार एक व्याख्यान तैयार करता है जो 'बादशाह का सभा के नाम सन्देश' कहा जाता है। उस व्याख्यान में उस दल को सारी नीति आ जाती है और यदि इस व्याख्यान की किन्हीं बातों पर सभा बहुमत से आपत्ति करे तब उस दल को शासन छोड़ना ज़रूरी होता है। यही बात इस लिबरल मंत्रि-मण्डल के लिए भी हुई। २८ अगस्त १८४१ को उसकी नीति के विरुद्ध प्रस्ताव पास हो गया और टोरी दल की ओर ९१ राय ज़्यादा आईं। फिर क्या था, इन्होंने त्याग-पत्र दे दिया और महारानी विक्टोरिया ने दूसरे ही दिन सर राबर्ट पील को बुला भेजा और उन्हें अपना मंत्रि-मण्डल बनाने का आदेश दिया।

सर राबर्ट पील के मंत्रि-मण्डल में भला ग्लैडस्टन न रहें? हिसाब-किताब के मामले में ये मशहूर थे ही। इनको 'व्यापारबोर्ड का उप-सभापति' तथा 'टकसाल का मालिक' का बनाया गया।

व्यापार-बोर्ड में ग्लैडस्टन ने बड़ी योग्यता से काम किया। उस समय बहुत सी चीज़ों पर, प्रायः बाहर से आनेवाली सभी चीज़ों पर, चुङ्गी लगा करती थी। धीरे-धीरे इङ्गलैण्ड में चुङ्गी न लगने का आन्दोलन उठ रहा था। जनता चुङ्गी न लगाने से यह जानती थी कि चीज़ें सस्ती मिलेंगी। इसलिए टोरी-दल ने दर्जनों चीज़ों पर से चुङ्गी उठा लेने का निश्चय किया। ग्लैडस्टन ने बड़ी होशियारी के साथ संख्या तैयार कर इनका हिसाब बनवाया था।

नई चुङ्गी का मसविदा ग्लैडस्टन ने बड़ी योग्यता के साथ तैयार किया था। आंकड़े बड़ी होशियारी के साथ बनाये गये थे तथा सारा चित्र इतना साफ़ था कि अदना आदमी भी उसे समझ सकता था। साधारण-सभा में जब ये पेश हुए तब सभा की आँख इस युवक की धन-सम्बन्धी, हिसाब-किताब सम्बन्धी, योग्यता की ओर उठ गई और ग्लैडस्टन इस मामले में पण्डित मान लिये गये।

चुङ्गी, कर तथा रुपये-पैसे का ब्यौरा ये सब सर-दर्द पैदा करनेवाली चीज़ें हैं। इनके झमेले में पड़ने से दिमाग़ पागल हो जाता है। ग्लैडस्टन ने इन विषयों में काफ़ी गति प्राप्त करली थी और एक यही बात सभाको प्रभावित करने के लिये काफ़ी थी। दूसरी बात यह थी कि, एक आदमी इन सब मामलों में पण्डित हो सकता है, उसे हिसाब-किताब तैयार करना .खूब आता हो, परन्तु यदि वह उनको पेश करने का ढङ्ग नहीं जानता तो लोग उनको सुनते-सुनते जम्हाइयाँ लेने लगेंगे। कितने तो सो जायँगे। पर ग्लैडस्टन में बोलने की भी शक्ति थी। ये शुष्क से शुष्क विषय को इतने आकर्षक ढंग से कहते थे कि लोग बिना उसे पूरा सुने न हटते थे। यह सोने में सुगंध नहीं तो क्या है?

मंत्रि-मण्डल में प्रवेश

भारत इस समय क़रीब-क़रीब पूरी तरह अँग्रेज़ी हुकूमत में आ गया था। पर यहाँ अँग्रेज़ राज नहीं करते थे बल्कि वह

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ही हाथ में रहा। हर २० वें वर्ष कम्पनी को सरकार (सम्राट् और पार्लामेण्ट) की ओर से हुकूमत करने का पट्टा मिलता था। पर दिन पर दिन यह बात जाहिर होती जाती थी कि भारत ऐसी दुधारू गाय, जिसको दुहकर इङ्गलैण्ड को सोने में मढ़ा जा सकता है, यों ही ख़ाली छोड़ देने से काम न चलेगा। कम्पनी के शासन पर कुछ देख-रेख और अपना नियन्त्रण भी रखना पड़ेगा। इसीलिए महाशय पिट जिस समय प्रधान-मंत्री थे उन्होंने एक बोर्ड आफ़ कण्ट्रोल (नियन्त्रण-समिति) बनवाई थी जिसको आज-कल के भारत-मंत्री के दफ़्तर से ज़्यादा मिलती-जुलती एक समिति कहा जा सकता है। १८४३ में सर राबर्ट पील ने मंत्रि-मण्डल के एक बड़े होशियार मेम्बर, व्यापारी-बोर्ड के अध्यक्ष लार्ड रिपन, जो भारत के बड़े लाट भी रह चुके थे, इसी बोर्ड आफ़ कण्ट्रोल के अध्यक्ष बना दिये गये। अध्यक्ष का स्थान ख़ाली होते ही ग्लैडस्टन (जो उप-सभापति या उपाध्यक्ष थे ही) को अध्यक्ष बना दिया गया और इस प्रकार वे मंत्रि-मण्डल में भी आ गए।

ग्लैडस्टन बड़े निर्भीक युवक थे। इनके सामने अपने आचरण की निगाह में जनता का सम्मान, साथियों की फटकार तथा मित्रों का अपने भावी उन्नति के रास्ते में काँटा बोकर उसे नष्ट करने की धमकी बड़ी मामूली चीज़ थी। ग्लैडस्टन में और अवगुण भले ही हों, इनसे पराधीन देशवालों को सिवाय

हानि के लाभ न हुआ हो, इनके समय में ग़ुलाम राज्यों पर अँग्रेज़ी पञ्जा और भी कड़ाई से कसा गया हो, पर यह सब तो अँग्रेज़ों के लाभ के लिए था। एक अँग्रेज़ अँग्रेज़ जाति का उपकार करते समय यह नहीं देखता कि इससे दूसरों की हानि होती है। उसकी अँग्रेज़ियत की यही निशानी है।

ग्लैडस्टन ने, इसी आत्मा की आवाज़ के कारण, १८४६ में मंत्रि-मण्डल से इस्तीफ़ा दे दिया और एक बार ऐसा मालूम पड़ा कि इस उठते हुए नौजवान ने अपनी उन्नति में अपने आप कुल्हाड़ा मारा। अगर कोई बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ इस काम को करता तो शायद लोग इसे भारी बात समझते। पर एक नौजवान का, इतनी जल्दबाज़ी करना उसके लिए घातक था।

१८४५ में सर राबर्ट पील ने अपने आयरलैण्ड के मित्रों के दबाव के कारण तथा वहाँ के लगातार आन्दोलन से डर कर, वहाँ के ईसाई धर्म के कैथोलिक (सनातनी) सम्प्रदायवाली प्रजा को (आयरलैण्ड में तीन चौथाई प्रजा कैथोलिक है) सन्तुष्ट करने के लिए यह निश्चय किया कि यहाँ तीन कालिज धार्मिक तथा विद्या की शिक्षा देने के लिए ऐसे खोले जायँ जो किसी सम्प्रदाय के न हों। इसके अलावा मेनूथ नामक नगर में सरकार ने एक कालिज खोल रक्खा था; जिसे सरकार की ओर से कुछ सहायता भी मिलती थी। यह कालिज कैथोलिक समु-

दायवालों के लिए था ताकि कैथोलिक धर्म की शिक्षा पाने के लिए आयरलैण्ड के युवकों को स्पेन, फ्राँस, व इटली जाना न पड़े। सर रावर्ट पील ने इस कालिज की भी सरकारी सहायता बहुत कुछ बढ़ा देने का निश्चय किया।

जब यह बातें प्रस्ताव-रूप में मंत्रि-मण्डल के सामने, सरकारी तौर पर साधारण-सभा में पेश होने के लिये आईं, तब ग्लैडस्टन बड़े असमञ्जस में पड़े। सरकारी मेम्बर होने के कारण सरकार के प्रस्ताव पर उसी की ओर से वोट देना इनका कर्तव्य था। प्रस्ताव भी ऐसा था कि वे उस पर वोट सरकार के ही पक्ष में देनेवाले थे। पर सम्भव था कि कहीं राय न बटे। बिना विचार किये कुछ कहना असम्भव था और तबतक विचार करना भी इन्होंने पाप समझा जबतक ये सरकार के मेम्बर रहे। इन्होंने अपनी आत्मा को बांधना अनुचित समझा और इस कारण १८४५ में मंत्रि-मण्डल से इस्तीफ़ा दे दिया।

त्यागपत्र का अर्थ यह नहीं है कि इन्होंने "टोरी" दल से भी इस्तीफ़ा दे दिया। सर रावर्ट पील के साथी यह रहे ही और इन्होंने राय भी प्रस्ताव के पक्ष में दी। इनके इस कार्य को लोग मज़े में समझ नहीं सके। जब पक्ष में वोट देना ही था तो इस्तीफ़ा क्यों दिया? पर ग्लैडस्टन का कहना था कि, 'पक्ष में वोट देना है' यह निर्णय इस्तीफ़ा देने के बाद ही किया जा सकता है।

उन्नति की ओर

पाठकों को आगे चल कर पता चलेगा कि किस प्रकार खूसट् विचारवालों का साथी होने पर भी ग्लैडस्टन उन्नतिशील विचारों को ग्रहण करते गए। यही नहीं, जिन बातों को इन्होंने स्वीकार कर लिया, उसमें निर्भय होकर अपने दल के खिलाफ़ विरोधी-दल के साथ राय तक दे दी, कई बातें ऐसी थीं जो इनसे भूल के कारण नहीं हो सकीं। इनमें आयरलैण्ड की यात्रा थी। १८४५ में ही अपने एक मित्र को पत्र लिखकर ग्लैडस्टन ने बुला भेजा कि, 'आकर मुझे आयरलैण्ड लिवा चलो। मैंने वहाँ की आशान्ति तथा प्रजा की पीड़ा का समाचार सुना है। उसे स्वयं अपनी आँखों देखना व समझना चाहता हूँ।' न जाने किन कारणों से वह यात्रा न हो सकी। यदि ग्लैडस्टन एक बार जाकर आयरलैण्ड की दशा देख आते तो उनके ऊपर आगे चल कर जो अत्याचार हुए हैं, उसमें कम से कम इनका हाथ न रहता।

राज्य-धर्म के विषय में ग्लैडस्टन के दृढ़-मत को हम बतला चुके हैं। पर अनुभवी मैकाले की बात ही ठीक निकली। अनुभव ने ग्लैडस्टन के राज्य-धर्म के जोश को ठंडा कर दिया। किन्तु १८४७ में ही आक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय की ओर से पार्लमेण्ट की मेम्बरी के लिए फिर से खड़ा होने के समय इन्होंने जो चुनाव के लिए 'वोटरों से निवेदन' 'प्रकाशित किया

था तथा जो बयान कि, ग्लैडस्टन की अत्यन्त मूल्यवान् रचनाओं में से समझा जाता है, उसमें आपने साफ़ लिख दिया कि, आप में वह विचार-परिवर्तन हो गया है—आप अब यह समझ गए हैं कि राज्य-धर्म निश्चित करना असम्भव है। आपने यह स्वीकार किया कि राजा का धर्म प्रजा के धर्म के साथ समझौते में ही चल सकता है अथवा राजनीति धर्म के झमेले में नहीं जकड़ी जा सकती।

यदि दूसरा कोई होता तो अपनी बात आप ही काटने में सङ्कोच करता। पर ग्लैडस्टन के लिए 'सत्य के साथ अनुभव' के रूप में यह सब बातें थीं।

एक और महत्वपूर्ण बात में इनका विचार बदल गया। शुरू से ही 'टोरी' जड़वाद में पलने पर भी ग्लैडस्टन यह महसूस करने लगे थे कि इङ्गलैण्ड के चुङ्गी के तरीक़ों को बदलना चाहिए। बाहर से जो माल देश में बिकता है उस पर सरकार थोड़ी चुङ्गी लगाती है। इससे सरकार को आमदनी होती ही है, दूसरे चुङ्गी लगने से वह माल मंहगा पड़ता है और लोग विदेशी माल न ख़रीद कर घर में ही पैदा होने वाले बिना चुंगी के सस्ते माल को ख़रीदते हैं।

इसी प्रकार जब अपने देश का माल बाहर जाता है तब उसे बाहर जाकर बिकने से रोकने के लिए, ताकि वह अपने देश में ही सस्ता बिके, उस पर चुङ्गी लगा दी जाती, इसलिए कि, वह विदेशी बाज़ार में मँहगा पड़े। इङ्गलैण्ड में उस समय

चुङ्गी के मामले में दो दल थे। एक संरक्षणवादी, दूसरे स्वतंत्र व्यापार वादी।

संरक्षणवादी यह कहते थे कि चुङ्गी लगाकर अपना माल अपने देश में ही रहने दिया जाय। वहीं उसे खपाया जाय तथा बाहरी माल न ख़रीदा जाय। पर स्वतंत्र व्यापार वाले कहते थे कि चुङ्गी उठा ली जाय और अपने माल को बाहर के बाज़ार में बेचकर ख़ूब फ़ायदा उठाया जाय। जो चीज़ें ज़्यादा फ़ायदे की हों, उन्हें ही अपने देश में बनाया जाय और उनसे फ़ायदा उठाया जाय। जो माल बाहर से मँगाने में सस्ता पड़े उसके लिए देशवाले क्यों अपना समय बरबाद करें—जबकि, उतने ही समय में वह बड़े उपयोगी काम कर सकते हैं।

असल में सवाल कच्चे व पक्के माल का था। उन दिनों नई-नई खोजें हो रही थीं। तरह-तरह की मशीनें ईजाद हो रही थीं। कल-कारख़ाने चारों ओर खुल रहे थे। यूरोप में उद्योग-धन्धों की एक लहर सी आगई था। इस कारण उन्नति शील दल कहता था कि, बाहर पराधीन देशों से कच्चा माल याने बिना तैयार माल, जैसे रुई मंगाकर अपने यहाँ कपड़ा बनाकर उसीको अठगुने दाम में बाहर भेजने में ज़्यादा फ़ायदा है न कि अपने यहाँ रुई पैदा कर समय नष्ट करने में। नाज को ही लीजिए। भारत, आस्ट्रेलिया आदि गेहूँ पैदा करने वाले उपनिवेशों और राज्यों से जब पानी के मोल गेहूँ आ सकता है तब अपने यहाँ खेती करने में समय नष्ट क्यों किया जाय—

और वेही किसान उद्योग-धन्धों में लग जायँ। बाहरी नाज पर कड़ी चुङ्गी लगाकर उसका आना असम्भव कर दिया गया था। इसी नाज की चुङ्गी को उठाकर देश में सस्ता नाज आने देने के लिए इङ्गलैएड में बहुत दिनों से आन्दोलन हो रहा था। इसका विरोध करनेवाले बड़े-बड़े ज़मींदार सरदार थे। वे जानते थे कि नाज की खेती इङ्गलैएड की बिलकुल नष्ट हो जायगी और इस तरह उनकी आमदनी पूरे तौर पर मारी जायगी।

प्रायः सभी बड़े 'टोरी' राजनीतिज्ञ स्वतन्त्र-व्यापार के विरुद्ध थे। न्यूकैसल के वे सरदार जिनकी रियासत निवार्क से ग्लैडस्टन को मेम्बरी मिली थी, वे भी स्वतन्त्र—व्यापार के विरोधी थे। सर रावर्ट पील तथा ग्लैडस्टन भी इसका विरोध करते थे। किन्तु उन दिनों इस व्यापार के समर्थक बढ़ते ही जा रहे थे और ग्लैडस्टन-तथा उनके कारण सर रावर्ट पील भी इसके समर्थक हो चले थे।

१८९५ में आयरलैंएड में मामूली खेती एक दम नष्ट हो गई। वहाँ की ग़रीब प्रजा ज़्यादातर आलू की खेती पर ही गुजारा करती थी। इस कारण वहाँ ज़ोरो का अकाल पड़ा। चुङ्गी की कड़ाई के कारण बाहर से नाज आ नहीं सकता था। अभागिनी प्रजा भूखों मरने लगी। पर उसका कोई उपाय था ही नहीं। ग़रीबों की इस हाय से स्वतन्त्र-व्यापार के समर्थकों को बड़ा सहायता मिली। उनका आन्दोलन खूब तेज़ हो उठा। एक बार

जब ज़ोरों से आग लग गई तथा प्रजा ने व्यावहारिक रूप में इस चुङ्गी से बुराई देख ली—फिर उसको हटाना क्या मुश्किल था। सर राबर्ट पील ने पार्लमेन्ट में "नाज-क़ानून" यानी नाज पर चुङ्गी उठा देने का मस्विदा पेश कर दिया।

इस मस्विदे के पेश होने से टोरी-दलवालों में आपस में ही फूट हो गई। पुराने विचार के नामी सरदार सर राबर्ट पील से नाराज़ हो गए। पर विरोधी लिबरल-दल और उसके अगुआ लार्ड जॉन रसेल तो यह चाहते ही थे कि सुधार हो। अतएव उन्होंने पील का साथ दिया।

मंत्रि-मण्डल में भी फूटमत हो गई। पील के साथी इस स्वतन्त्र-व्यापार की नीति को चाहना तो दूर रहा, सोचना भी पाप समझते थे। उपनिवेश-सचिव लार्ड स्टैनली ने इस्तीफ़ा दे दिया और उनके ख़ाली स्थान पर ग्लैडस्टन उपनिवेश-मंत्री बना दिये गए। एक बार पुनः पील के मंत्रि-मण्डल में ग्लैडस्टन का प्रवेश हो गया। यह पद कोई साधारण पद न था। ऐसे तूफ़ान के समय इनको यह पद देना मानो किसी के सिर पर बहुत बड़ी बला लादना था।

मेम्बरी का त्याग

इस पद-ग्रहण के कारण श्रीग्लैडस्टन को अपनी मेम्बरी छोड़नी पड़ी और अपने मस्विदे को सभा में पास कराने

के लिए सर पील को अकेले ही लड़ना पड़ा। उस अवसर पर ग्लैडस्टन की सहायता न मिलने के कारण पील को बड़ा नुक़-सान पहुँचा। ग्लैडस्टन के समान ज़ोर व जोश के साथ व्याख्यान देनेवाला कोई न था इस कारण बेचारे पील अकेले ही हिसाब-किताब का झमेला बर्दाश्त करते रहे।

ऊपर हम लिख आए हैं कि ग्लैडस्टन को पार्लमेण्ट की मेम्बरी न्यूकैसेल के ड्यूक की कृपा से, निवार्क के निर्वाचन-क्षेत्र से, मिली थी। पर ये ड्यूक स्वतन्त्र-व्यापार के कट्टर दुश्मन थे। अतः ग्लैड-स्टन के लिए यही उचित था कि वे निवार्क की मेम्बरी छोड़ दें। इन्होंने जनवरी १८४६ में मेम्बरी छोड़ दी और अपने सरकारी पद पर बने रहे। १८४७ में, पार्लमेण्ट की सरदार-सभा से भी, बड़े परिश्रम के बाद, स्वतन्त्र-व्यापार का प्रस्ताव पास हो गया। सारा देश इस विजय से गूँज उठा और सर राबर्ट पील की यही विजय सबसे बड़ी विजय थी।

नवीन पार्लमेण्ट

इस नई पार्लमेण्ट में लिबरल मंत्रि-मण्डल रहा। लार्ड जॉन रसेल ने बड़ा योग्यता से काम सम्भाला। टोरी-दल का होने पर भी ग्लैडस्टन ने लिबरल-दल का समय-समय पर पूरा समर्थन किया। १८४७ से १८५० तक यूरोप अशान्ति तथा अस्थिरता का, संग्राम तथा पुनर्निर्माण का, घर बना रहा। उस समय एक प्रकार से यूरोप का सारा ढाँचा ही बदल रहा था।

उद्योग-धन्धों की उन्नति ज़ोरों पर थी। यूरोपीय राज्य निजी कलह तथा घरेलू झगड़ों को निपटाकर एक अस्थाई शान्ति को भोग रहे थे। ग्लैडस्टन ने सुधारवादी दल का पूरा साथ दिया या नहीं, इसका पूरा पता हमें नहीं है। पर समय-समय पर साथ देने के उदाहरण बराबर मिलते हैं।

इनका पार्लामेण्टरी जीवन पहले के समान ही कामों से भरा था। पार्लामेण्ट का मेम्बर अगर काम करना चाहे तो सच-मुच में उसके लिए बड़ा काम है और ग्लैडस्टन के लिए काम करना ही जीवन का एक उद्देश्य था। वे यह ख़ूब समझते थे कि आराम करने के लिए ही ईश्वर ने बुढ़ापा बनाया है और जवानी काम करने,तथा नाम व यश पैदा करने के लिए दी है।

युद्ध के बादल

यूरोप में बहुत समय से यहूदी और ईसाई धर्म्मावलम्बियों में कलह चला आ रहा है। यहूदी तथा ईसाई मत वालों का यह झगड़ा, उस समय का है जिस समय एक यहूदी बादशाह ने ईसामसीह को सूली पर चढ़ाया था। यद्यपि सभ्यता तथा शिक्षा के नये प्रवाह में इन दोनों धर्म्मावलम्बियों ने प्रेम से रहना सीख लिया है पर यह मसला अभी तक तै नहीं हुआ। उस ज़माने में तो यहूदी से ईसाई इतनी नफ़रत करते थे कि वे यहूदियों को ज़िन्दा जला देना चाहते थे। उस समय यूनान में, ऐसा रिवाज़ था कि, ईसाई लोग यहूदियों के प्रति अपनी

घृणा दिखलाने के लिए उनके देवता यहोवा की मूर्ति बनाकर, ईस्टर के त्यौहार में जलाया करते थे। १८४७ में यूनानी सरकार ने क़ानून बनाकर ऐसा करने की मनाही कर दी।

जनता इस क़ानून से बहुत नाराज़ हुई। यूनान की राजधानी एथेंसकी जनता ने अपना क्रोध डौनपैसिफ़िको नामक एक यहूदी निवासी के ऊपर निकाला। उसके घर को घेर कर लूट लिया गया। घरका सारा सामान जला डाला गया। यानी, वहाँ की जनता का सारा ग़ुस्सा डौनपैसिफ़िको के ऊपर उतरा।

डौनपैसिफ़िको का जन्म स्पेन प्रान्त के ज़िब्राल्टर नामक स्थान में हुआ था। ज़िब्राल्टर अँग्रेज़ी हुकूमत में था इसलिए डौनपैसिफ़िको महारानी विक्टोरिया की प्रजा हुआ—और महारानी की प्रजा संसार में किसी भी कोने में हो, उसके ऊपर महारानी की छत्रछाया होगी ही। डौनपैसिफ़िको ने यूनानी अदालत में दर्ख़ास्त देने के स्थान पर सीधे लन्दन के विदेशी-विभाग से अपील की।

प्रधान मन्त्री लार्ड पामर्स्टन बड़े योग्य आदमी थे। किन्तु, उनमें दुर्बलता भी कम न थी। उन्होंने डौन पैसिफ़िको के अपमान को अगरेज़ जाति का अपमान समझा और यूनानी सरकार को फ़ौरन से पेश्तर उस यहूदी का नुक़सान चुका देने के लिए लिखा। यूनानी सरकार शायद ऐसा कर भी लेती; पर, पैसिफिको की हर्ज़ाने की रक़म बहुत अधिक थी। उसने सर

कार से साढ़े चार लाख रुपये के लगभग अपना नुक़सान माँगा। अपने बिल में उसने दो हज़ार के करीब तो पलंग का दाम और मामूली गिलाफ़ के लिए डेढ़सौ रुपया माँगा था। सब लोग जानते थे कि डोनपैसिफ़िको अमीर होने के साथ ही इतना ज़्यादा अमीर नहीं था —अगर अमीर था भी तो गिलाफ़ के के मामले में इतना अमीर क्या हो सकेगा कि डेढ़ सौ रुपये का गिलाफ़ रक्खे। पर पामर्स्टन के दिमाग़ में एक बार जो बात ठीक जँच गई फिर उसका निकलना ग़ैर-मुमकिन था। उन्होंने यूनानी सरकार से फ़ौरन हर्ज़ाना चुकाने लिए कहा। यूनान-सरकार ने जब इतनी बड़ी रक़म चुकता करना नामंज़ूर किया तब फ़ौरन बृटिश बेड़े को आज्ञा दी गई और उसने यूनान-वालों के सभी जहाज़ पकड़ लिए।

यह कार्य एक प्रकार से यूनान पर युद्ध-घोषणा थी। इङ्ग-लेण्ड ऐसे राष्ट्र के लिए यूनान को पीस डालना कोई बड़ी बात न थी। पर, प्रधान मन्त्री की इस ज़्यादती से स्वयं उनके दलवाले तक ख़ुश न थे। लिबरल और टोरी दोनों ही महसूस करते थे कि ज़्यादती व ज़ुल्म किया जा रहा है। पर, एक बार आग में हाथ डाल देने पर इज़्ज़त बचाना ज़रूरी था।

यूनान एक छोटा सा राज्य है। उसकी स्वाधीनता यूरोप के किसी बड़े राज्य के लिए हड़पना मामूली बात थी। पर, फ्रांस,

इङ्गलैण्ड और रूस ने मिलकर एक सन्धि की थी जिसमें यूनान की स्वाधीनता की रक्षा करने की शपथ खाई थी। अब इङ्गलैण्ड द्वारा ही यूनान की स्वाधीनता का अपहरण देख-कर (इङ्गलैण्ड की उन्नति से चिढ़े हुए तथा जान-बूझ कर छेड़-खानी करने का पहले से ही विचार करनेवाले) रूस और फ्रान्स ने इङ्गलैण्ड को एक बहुत कड़ा पत्र लिखा जिसमें इङ्गलैण्ड के कार्य की कड़ी भर्त्सना की तथा यदि इङ्गलैण्ड अपनी सेना न हटाले तो लड़ाई छेड़ने की धमकी दी।

कुछ समय के लिए ऐसा मालूम पड़ा मानो लड़ाई छिड़ जायगी। यूरोप में युद्ध के बादल छा गए। चारों ओर सेनाएं तैयार होने लगीं। किन्तु, तलवारें केवल झन्कार कर रह गईं। उनकी जंग ही छुटी पर सफ़ाई नहीं हुई। यूनान-सरकार ने क़रीब पन्द्रह हज़ार रुपये ही डौनपैसिफ़िको को दिए और मामला शान्त हो गया।

किन्तु, लार्ड पामर्स्टन पर घर में ही बड़ी विपत्ति पड़ी। इनके विरोधियों की बन आई और उन्होंने यह आवाज़ उठाई कि पामर्स्टन की नीति से अँग्रेज़ सरकार की बेइज़्ज़ती हुई है। लार्ड स्टैनली के प्रस्ताव पर सरदार-सभामें सरकार पर अवि-श्वासका प्रस्ताव पास हो गया। परन्तु जबतक साधारण-सभा में कुछ न हो, तबतक सरदार-सभा के चिल्लाने को कौन सुनता है ? अपने एक पिट्ठू द्वारा, २४ जून १८५० को साधारण सभामें उन्होंने यह प्रस्ताव कराया कि, विदेशी मामलों में सरकारी नीति

इङ्गलैण्ड की प्रतिष्ठा-स्थापन करनेवाली है। सरकार की प्रशंसा के इस प्रस्ताव के पक्ष में बोलते समय लार्ड पामर्स्टन ने जो व्याख्यान दिया था वह पार्लमेण्ट में प्रधान मंत्रियों के व्याख्यानों में सबसे मशहूर व्याख्यानों में से एक माना जाता है। सरकारी नीति में कोई भी अवगुण नहीं था तथा उसकी प्रत्येक बात समर्थन योग्य थी।

लार्ड पामर्स्टन के विरोध में सर राबर्ट पील बोले। सर पील का पार्लमेण्ट में यह अन्तिम भाषण था। इसके बाद वे पार्लमेण्ट में फिर न बोल पाए। किन्तु लार्ड पामर्स्टन की स्पीच जितने ऊँचे दर्ज़े की थी उतनी ही—तथा कई अंशो में उससे भी अधिक तेजस्वी तथा तर्क-पूर्ण व्याख्यान इनके विरोध में, सर राबर्ट पील के समर्थन में, ग्लैडस्टन का था। कहते हैं इतना सुन्दर व्याख्यान ग्लैडस्टन ने पहले कभी न दिया था और न आगे ही कभी दे सके।

सर पील की मृत्यु

एक दिन एक ऐसी दुर्घटना हो गई जिसने सर राबर्ट पील को संसार से पर उठा दिया। सर पील घोड़े पर अपने मकान जा रहे थे कि उसने इनको पटक दिया और वह इन्हीं के ऊपर गिर पड़ा। बेहोशी की हालत में ही किसी तरह उठाकर ये बेचारे

घर लाये गए। पर, फिर उन्हें होश न आया। २ जुलाई १८५० को, अपने दल और विशेष कर श्रीग्लैडस्टन को अनाथ बना कर ये ६३ वर्ष की ही उम्र में चलबसे।

पील की मृत्यु से एक बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ संसार से उठ गया। ग्लैडस्टन का तो नेता ही चला गया। पील इनके राजनीतिक गुरु थे। वे ही इनके आदर्श थे, वेही इनके मुखिया थे। उन्हीं पर इनकी ज़िन्दगी की उन्नति का भार था—पर पील की मौत से एक बहुत बड़ी बात हुई। वह यह कि—

ग्लैडस्टन की आत्मा पर से पील का दबाव उठ गया। ग्लैडस्टन को अब प्रत्येक काम पील की आँखों से न देख कर अपनी आँखों देखना होता। ग्लैडस्टन को अब स्वयं अपनी राजनीति, अपना दल, अपनी नीति बनानी पड़ता—पर, आज़ाद होने के साथ ही साथ ये अकेले भी हो गए।

मंत्रि-मण्डल में उलट-फेर

१८५० से १८५२ तक की घटनाओं को हम संक्षेप में बतला दें।

उस समय इङ्गलैण्ड में गिर्जाघर के मामले में भी दो दल थे। बहुत समय से ईसाइयों में दो फ़िरके हो गए थे। एक तो आर्यसमाजियों की तरह से वे ईसाई जो धर्मगुरु पोप को देवता मानने के लिए तैयार नहीं थे, मूर्तिपूजा में विश्वास न करते

थे, ईसामसीह के चित्र को या मूर्त्ति को पूजना बुरा समझते थे इत्यादि। वे 'प्रोटेस्टैण्ट' कहलाते थे। दूसरे वे जो सनातनी थे तथा पोप और मूर्ति-पूजा में विश्वास करते थे। वे "रोमन कैथोलिक" कहलाते थे।

रोमन-कैथोलिक तथा प्रोटेस्टैण्टों में पहले बहुत लड़ाई रहा करती थी। कितनी ही .खून-ख़राबियाँ हो चुकी थीं। इस समय रोम के पोप ने इङ्गलैण्ड के रोमन-कैथोलिक पादरियों को अपना ख़िताब देना किया। इससे प्रोटेस्टैण्टों ने समझा कि ये रोम के साथ धार्मिक सम्बन्ध जोड़ रहे हैं। इस मामले में बड़ा लड़ाई-दङ्गा शुरू हुआ। प्रोटेस्टैण्ट जहाँ ज़्यादा होते, रोमन-कैथोलिकों को पीटते या जहाँ कम होते, पिट जाते। चारों ओर इङ्गलैण्ड में छोटा सा बलवा मचा रहता। महारानी को यह मार-काट नापसन्द थी। इङ्गलैण्ड में प्रोटेस्टैण्ट बहुतायत से थे। इसलिए उनको प्रसन्न करने के लिए क़ानून बनाना ज़रूरी था। प्रधान-मंत्री लार्ड जॉन रसेल ने इन ख़िताबों को स्वीकार करना ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया। यह क़ानून जब पार्लामेण्ट में पेश हुआ, तब इसके विरोधी दल के अगुआ श्रीग्लैडस्टन बने। यह पहला अवसर था जब ग्लैडस्टन पार्लामेण्ट में अगुआ बन सके थे। इसी अवसर पर मि० डिसरायेले ने भी एक ज़ोरदार व्याख्यान क़ानून के ख़िलाफ़ दिया था। पर लार्ड जॉन रसेल ने उसे पास कराकर ही छोड़ा।

इस घटना का महत्त्व केवल इतना ही है कि इससे हमारे

नायक को एक बार पार्लमेण्ट का नेतृत्व ग्रहण करने का अवसर दिया। इसके बाद, अपनी कई छोटी-छोटी हार से परीशान होकर लार्ड जॉन रसेलने पार्लमेण्ट के प्रधान-मंत्री पद से त्याग-पत्र दे दिया। इनके बाद महारानी ने लार्ड स्टैनली तथा लार्ड एबरडीन दोनों से अपना मंत्रि-मण्डल बनाने के लिए पारी-पारी से कहा। पर सहायक तथा समर्थक न मिलने के कारण दोनों ने नामंज़ूर किया। लार्ड जॉन रसेल को ज़रूरतन अपना मंत्रि-मण्डल फिर बनाना पड़ा। पर यह नाव कितने दिन चलती। इनके पर राष्ट्र सचिव लार्ड पामर्स्टन की बाबत तो यह मशहूर ही है कि वे कितनी ही बातें बिना प्रधान-मंत्री तथा महारानी से पूछे अपने मनसे कर डालते थे। पर दूसरी दिसम्बर १८५१ को फ्रान्स में नेपोलियन के पुत्र लूई नेपोलियन ने जो बलवा करके अपना सिक्का जमा लिया था, उसका भी, बिना सलाह, समर्थन करने के कारण इन्हें बर्खास्त कर देना पड़ा। इस 'बेइज़्ज़ती' से पामर्स्टन सरीखा योग्य और निर्भय व्यक्ति न डिगा। उसने चेष्टा की, और स्वयं अपने नेता और मुखिया लार्ड जॉन रसेल को पार्लमेंट में हरवा दिया इस कारण उन्हें इस्तीफ़ा देना पड़ा। लार्ड स्टैनली के पिता इस समय मर गए थे। अब वे डर्बी के सरदार तथा सरदार-सभा के मेम्बर हो गए थे। लार्ड डर्बी प्रधान-मंत्री हो गए और मि० डिसरायेली प्रधान कोषाध्यक्ष तथा साधारण-सभा में सरकार के प्रतिनिधि हो गए। डिसरायेली ग्लैडस्टन के बाद पार्लमेंट के मेम्बर हुए थे।

ग्लैडस्टन के समान उनके पास धन नहीं था तथा उनके समान, शुरू में कोई मानी सरदार समर्थक नहीं मिला था। फिर भी, इन्होंने इतना महत्वपूर्ण पद पा लिया, यह इनकी योग्यता का प्रमाण है। हिसाब-किताब के मामले में ये बड़े योग्य थे। साधारण-सभा में ये सरकारी पक्ष के नेता हो गए। हिसाब-किताब का ब्योरा इन्होंने तैयार किया और वह पास हो गया। अब पार्लमेंट के भङ्ग करने का समय आ गया था तदनुसार वह भङ्ग की गई। फिर से चुनाव हो गया। ग्लैडस्टन पुनः ऑक्सफोर्ड से चुन लिए गए। डिसरायेली भी चुन लिए गए।

१८५२ से डिसरायेली तथा ग्लैडस्टन की होड़ शुरू होती है। कभी वे बाज़ी मारते थे और कभी ये। कभी इन्हें ऊँचा देखना होता, कभी उन्हें। दोनों एक से एक बढ़कर योग्य थे। यह होड़ १८७६ तक चली जब मि० डिसरायेली सरदार होकर, सरदार-सभा में चले गए।

दो प्रतिद्वन्द्वी

ग्लैडस्टन तथा डिसरायेली की प्रति-द्वन्द्विता का बड़ा रोचक इतिहास है। इतिहास में इस पर पृष्ठ पर पृष्ठ रंगे मिलते हैं। किन्तु इसका असली मज़ा ख़ूब पढ़-लिख लेने पर ही आप लोगों को आ सकता है।

हम बतला चुके हैं कि ग्लैडस्टन को महान् पुरुष बनाने के लिए

रुपया तथा ऊँचे पद से जितनी सहायता मिल सकती थी मिली। रुपये से जहाँ तक हो सका इनकी शिक्षा ऊँची से ऊँची की गई पर डिसरायेली एक ग़रीब लेखक का लड़का था। उसको ऊँचा उठाने के लिए पिता के साधारण नाम और परिचय की सहायता के अलावा-वह भी न-कुछ के बराबर, और कुछ नहीं था। जवान होते ही उसके मन में पार्लामेण्ट की मेम्बरी की इच्छा उठी पर उसके पूरा होने के कोई लक्षण न थे। पढ़ाई-लिखाई डिसरायेली की बड़ी साधारण थी पर सबसे ज़्यादा बुरी बात तो ग़रीबी थी। एक जगह पर क्लर्की करके ये पेट पालते थे और इसीसे इनके ऊपर बहुत कर्ज़ हो गया था।

उन दिनों पार्लामेण्ट की मेम्बरी के लिए हज़ारों रुपये पानी की तरह बहाने पड़ते थे। ये रुपये कहाँ से आते। इन सब कठिनाइयों को जीतकर डिसरायेली ऊँचे उठे, इससे यह तो साफ़ है कि कई मानो में ये ग्लैडस्टन से भी बड़े आदमी थे। व्याख्यान देने की शक्ति दोनों में अपने ढङ्ग की निराली थी। ग्लैडस्टन का व्याख्यान उस समय सबसे रोचक होता था जब सबसे अधिक नीरस बात—हिसाब-किताब की शुष्क संख्याएं समझानी पड़तीं। उनकी प्रशंसा इसी में है कि वे ऐसी बातें, जिसे सुन कर लोग जम्हाई लेने लगते हैं ऐसे रोचक ढङ्ग से कहते थे कि सुननेवाले मुग्ध हो जाते थे।

डिसरायेली में इसका उलटा था। वे इन बातों को उतने जोश व जान के साथ नहीं कह सकते थे जितना केवल व्या-

ख्यान देना और दूसरों-दुश्मनों-का मज़ाक़ उड़ाना। चुटकी लेने में डिसरायेली इतने होशियार थे कि व्याख्यान सुननेवाला इन पर पूरी तरह मोहित हो ही जाता। जिस समय डिसरायेली अपने विरोधी दल के धुर्रे उड़ाते थे, उस समय पार्लमेण्ट में सन्नाटा छा जाता था और विरोधी स्वयं लाज के मारे परीशान हो जाते थे।

मित्र

जिस प्रकार ग्लैडस्टन के ज़बर्दस्त प्रतिद्वन्द्वी श्रीडिसरायेली थे, उसी प्रकार ज़ोरदार मित्र श्रीजेम्सब्राइट थे। जेम्सब्राइट उन सुयोग्य प्राणियों में से हैं जो अपने मित्र को प्रत्येक विपत्ति में पीछे कर ख़ुद लड़ाई में आगे कूद पड़ते हैं। ब्राइट का पार्लमेण्टरी जीवन बड़ा उज्ज्वल है। ये सदैव ग्लैडस्टन के साथ रहे—यद्यपि अन्त में मतभेद हुआ पर बहुत पीछे। ग्लैडस्टन में जो अभाव था, उसकी कमी श्रीब्राइट पूरा करते थे। इनके व्याख्यानों की जिस गम्भीरता को अपने व्यंग्य के पैने बाणों से डिसरायेली छेद डालते थे, उस कमी को पूरा करने में श्रीब्राइट थे। इनके व्याख्यान भी उसी प्रकार व्यंग्य तथा मज़ाक से भरे होते थे। कहते हैं कि डिसरायेली ब्राइट से बहुत घबराते थे और उन्हें कभी नहीं छेड़ते थे।

ब्राइट में कई बातें बहुत अच्छी थीं। पीड़ित प्रजा का पक्ष लेने में इन्हें बड़ा सुख मिलता था। भारत में ईस्ट इण्डिया

कम्पनी की हुकूमत बढ़ती जा रही थी। १८१५ में ही इनकी विजय क़रीब-क़रीब समाप्त हो गई थी। पर थे तो ये बनिये ही। हुकूमत के साथ व्यापार करना—तथा व्यापार का अधिक ख़याल रखना यही उनका धर्म था। किन्तु ब्राइट ने पार्लमेएट में इस बात पर बहुत ज़ोर दिया कि भारत के शासन में कम्पनी अपना व्यापारी-हित कम करे। उन दिनों पार्लमेएट में भारत की चर्चा करने का श्रेय श्रीब्राइट को ही है और उन्हीं की कृपा के कारण श्रीग्लैडस्टन का भी ध्यान उधर ज़्यादा खिँचा रहता था।

आयरलैएड की स्वाधीनता के आन्दोलन में श्रीब्राइट ने इस बात की ख़ूब कोशिश की थाकि पार्लमेएट उदार क़ानून बनाकर आयरलैएड की मुसीबतें कम करे। पर अँग्रेज़ जल्दी नसीहतों पर ध्यान नहीं देते। यदि ब्राइट की बात उसी समय सुनली जाती तो बहुत सी बुराइयाँ न हो पातीं।

डिसरायेली की हार

डिसरायेली तथा ग्लैडस्टन की लड़ाई १८५२ की पार्लमेएट से शुरू हुई। डिसरायेली तथा ग्लैडस्टन की यह लड़ाई दो कारणों से बहुत महत्वपूर्ण है। एक तो इसने लगातार २४ वर्ष तक चलनेवाला संग्राम छेड़ा। दूसरे वही ग्लैडस्टन जो कल तक 'सनातनी' या पुराने विचारों के जड़ दल—

'टोरी' दल के बड़े भारी नेता थे—अब लिबरल-दल की ओर से, 'उदार' (लिबरल को 'ह्विग' कहते थे) दल की ओर से पार्लमेण्ट के मेम्बर हुए थे और उसी दल में बैठे थे, डिसरायेलो अनुदार अथवा टोरी-दल के नुमाइन्दे थे।

डिसरायेली ने सरकार के ख़र्च और आमदनी का जो ब्यौरा बनाया था, वह बड़ो योग्यता से तैयार किया गया था। पार्लमेण्ट के सामने उसे पेश करने पर दो बजे रात तक उन्होंने जो व्याख्यान दिया वह बड़ा प्रभावशाली था। उसका जवाब देने के लिए, २ बजे रात को जब ग्लैडस्टन उठे, तब लोगों ने समझा कि अब यह क्या करेंगे। पर ग्लैडस्टन के मधुर तथा प्रभावशालो व्याख्यान ने डिसरायेली के किए-कराये पर पानी फेर दिया। ग्लैडस्टन का दिमाग़ भी गज़ब का था। आपने अपनी एक नई स्कीम रक्खी जो इस प्रकार है—

कर–जनता से कर एक दम न लिया जाय। "यह ऐसी बात थी जो आग लगा सकती थी। जनता इससे ज़्यादा और क्या चाहेगी कि उसे 'टैक्स' न देना हो। १७ दिसम्बर १८५२ को सबेरे वोट लिया गया। १९ रायें ग्लैडस्टन के पक्ष में आईं और डिसरायेली का ब्यौरा (वज़ट) रद्द कर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि सरकार को इस्तीफ़ा देना पड़ा।

जनता का एक हिस्सा, जो टोरी दल को, विशेष कर ग्लैडस्टन के विरोधी डिसरायेली को बहुत प्यार करता था बड़ा नाराज़ हुआ। कहते हैं कि २० दिसम्बर को कुछ गुण्डे

ग्लैडस्टन को एक अकेले कमरे में पाकर उन्हें मारने और खिड़की की राह सड़क पर फेंकने के लिए घुस गए, पर न जाने क्या समझ कर छोड़ दिया। जो हो, ग्लैडस्टन डरनेवाले जीव न थे। पार्लामेण्ट भङ्ग हो गई। उसका फिर से चुनाव हुआ। इस बार चुनाव में श्री ग्लैडस्टन को बहुत गहरी लड़ाई लड़नी पड़ी। फिर भी आप का चुनाव हो ही गया।

डिसरायेली के दल की संख्या कम रही। मंत्रिमण्डल इस बार कई दलों में से बना। लार्ड एबरडीन प्रधान-मन्त्री बने। श्री ग्लैडस्टन को श्री डिसरायेली का पद-यानी चाँसलर आफ़ दी एक्सचेकर मिला। इन्होंने अपने हिसाब-किताब का ब्यौरा बहुत साफ़ बनाया और इनके बज़ट में कई बातें बहुत ही महत्व की थीं जिनको सुनते ही पार्लामेंट के मेम्बर ग्लैडस्टन के दिमाग़ की तारीफ़ करने लगे और सदा के लिए इस युवक ने अपनी धाक जमा ली। ग्लैडस्टन के हिसाब में—(१) 'टैक्स' एकदम उठा लिया जायगा। (२) व्यापार पर छोटी-मोटी चुङ्गियाँ उठा ली गईं। (३) डाक का ख़र्च, टिकट खर्च कम हो गया। (४) आम ख़र्च की बहुत सी चीज़ों पर से चुङ्गी उठा ली गई। (५) इन सब बातों में सरकार की आमदनी घट जाने से जो नुक़्सान होगा वह कमी सम्पत्ति-पिता की ज़ायदाद-पर अधिकार करने पर पुत्र से थोड़ा कर लेकर पूरी की जायगी। (६) शराब आदि पर थोड़ा कर बढ़ा दिया जायगा। (७) पन्द्रह सौ और दो हज़ार रुपये माहवार के

बीच की आमदनी वालों पर, उनकी आमदनी पर, प्रति पौंड कम से कम ५ पेंस के क़रीब कर और बढ़ जायगा।

पाठक इस बात से यह समझ लें कि उस आदमी का दिमाग़ कितना बड़ा रहा होगा जिसने ग़रीब जनता को करके भार से छुड़ा कर उसका बोझा ऊँची आमदनीवालों पर रख दिया। १८५३ के इस चिट्ठे को समझाते समय ग्लैडस्टन ने लगातार ५ घन्टे तक व्याख्यान दिया था।

इस मंत्रिमण्डल का शीघ्र पतन हो जाने के कारण लार्ड पामर्स्टन प्रधानमन्त्री हुए। लार्ड पामर्स्टन यद्यपि लिबरल दल के नहीं थे, किन्तु लिबरल दल के समर्थक और टोरी-दल के शत्रु थे। लार्ड एबरडीन तो टोरीदल के ही थे, यद्यपि उदार-टोरी थे। पर पामर्स्टन का मंत्रिमण्डल तो लिबरल मंत्रि-मण्डल ही रहा। इसमें भी श्री ग्लैडस्टन अपने उसी 'अर्थ-मंत्री' के पद पर रहे।

लार्ड पामर्स्टन ने क्रिमिया में बृटिश सेना को सहायता के लिए आदमी भेजे, रुपया भेजा, दाइयाँ भेजीं, भोजन के लिए रसद भेजी इससे जनता शान्त हो गई। जिस समय लार्ड पामर्स्टन ने प्रधान मंत्री का पद ग्रहण किया था, उन्होंने वादा किया था कि पहली सरकारी बद-इन्तज़ामी की जाँच न कराई जायगी और इसी वादे पर श्री ग्लैडस्टन उनके मंत्रि मण्डल में शरीक़ हुए थे; पर जब लार्ड पामर्स्टन ने जनता की नाराज़गी व पुकार को देखकर जाँच कराना मंज़ूर कर लिया तब

श्री ग्लैडस्टन तथा उनको अपना अगुआ माननेवाले दो मित्रों ने भी मंत्रिमण्डल से इस्तीफ़ा दे दिया। इस प्रकार यह लोग केवल तीन सप्ताह तक ही मंत्री रहे।

श्री ग्लैडस्टन का पद सर जियोर्ज लूई ने ग्रहण किया। लूई महोदय उन सुयोग्य आदमियों में से हैं जो बोलते कम हैं पर करते ज़्यादा हैं तथा जिनकी योग्यता को एहसान-फ़रामोश जनता जल्दी भूल जाती है। लूई महोदय के पास ग्लैडस्टन के समान मधुर धारा-प्रवाह का व्याख्यान न था पर इन्होंने बड़ी योग्यता के साथ काम सम्हाला।

भारत तथा चीन की बातें

अब हम ज़रा भारत की ओर भी पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं। भारत में अँग्रेज़ी राज-सत्ता इस समय पूरी तरह स्थापित हो गई थी। साथ ही अँग्रेज़ी अमलदारी में हिन्दुस्थानियों को ग़ुलाम बनाकर उनसे तिज़ारत करने का ज़्यादा ख़याल था। अँग्रेज़ी-कम्पनी पर पार्लामेण्ट समय समय पर अपना रोब चलाकर अच्छी हुकूमत करने की आज्ञा दिया करती थी तथा कम्पनी, १८५३ में राज्य करने का नया पट्टा पाने के बाद, व्यापारी नहीं रह गई थी पर न तो पार्लामेण्ट ने ज़्यादा ज़रूरत समझी कि हुकूमत अच्छी की जाय और न तब जनता ने (इङ्गलैण्डकी प्रजाने) ही उधर ध्यान दिया। इस कारण वहाँ का काम यों ही धांधली में चलता था।

अस्तु, क्रिमिया की लड़ाई से अँग्रेज़ एक मुश्किल से ख़ाली हुए थे कि एशिया में, फ़ारस के शाह ने अफ़ग़ानिस्तान पर हमला करके हिरात पर कब्ज़ा कर लिया। भारत से एक सेना भेजी गई। जिसने शाह की सेना को हरा दिया और उन्हें हिरात छोड़ना पड़ा। यह १८५७ की घटना है।

एक ओर अँग्रेज़ भारत में अपना सिक्का जमा चुके थे, दूसरी ओर चीन में भी ज़बर्दस्ती अपना व्यापार फैलाने की कोशिश कर रहे थे। चीनी अँग्रेज़ या यूरोपियनों से नफ़रत करते थे। इसी कारण १८५७ में कैण्टन के गवर्नर के हुकम से 'ऐरो' नामक व्यापारी जहाज़ को पकड़कर उसके मल्लाह और मुसाफ़िरों को पकड़ लिया। इङ्गलैण्ड में यह समाचार पहुँचते ही जनता क्रोध से पागल हो उठी। अँग्रेज़ी .खून में एक दूसरे भाई की लिए इतनी हमदर्दी रहती है कि दुनिया के किसी कोने में बैठा हुआ भी वह सारे बृटिश-साम्राज्य की हमदर्दी को भोग सकता है।

लार्ड पामर्स्टन ने एक बेड़ा भेजकर कैण्टन के गवर्नर को सज़ा दिलाई और इसी घटना के कारण, इङ्गलैण्ड ने जो ताक़त लगाकर चीन में अपना सिक्का जमाना शुरू किया और तीन वर्ष में, १८६० में, चीन के कई बन्दरगाह ज़बर्दस्ती, व्यापार के लिए सम्राट् से ले लिए।

अस्तु, इङ्गलैण्ड में अब भी ऐसे उदार लोग थे जो नहीं चाहते थे कि ऐसे .ज़ुल्म के काम पूरब में हो। उन्होंने लार्ड

पामर्स्टन के भेजे बेड़े व उसकी ज़्यादती के ख़िलाफ़ पार्लमेण्ट में प्रस्ताव किया और श्रीग्लैडस्टन भी, पामर्स्टन के दल के होते भी, इस काम को सरासर अन्याय और एक पूर्वी गवर्नर के साथ ज़्यादती कहने को बाध्य हुए। सरकार की हार हो गई और पार्लमेण्ट का फिर से चुनाव हुआ। इस बार श्रीग्लैडस्टन बिना विरोध ऑक्सफ़ोर्ड-विश्वविद्यालय की ओर से मेम्बर हो गए।

अँग्रेज़ जनता बड़ी भावुक है। उसने जब लार्ड पामर्स्टन की यह पुकार सुनी कि 'कैण्टन का गवर्नर एक गुस्ताख़ जंगली आदमी है' तो वह उसके साथ हो गई। लार्ड पामर्स्टन ने बड़ी चतुराई से जनता की आँख में पट्टी बाँधी और बहुमत के साथ वे फिर पार्लमेण्ट में दाखिल हो गए—वे तो सरदारसभा में थे—उनका दल बहुमत में रहा तथा उन्हीं की सरकार रही।

श्रीग्लैडस्टन को पामर्स्टन की इस विजय से बड़ी ग्लानि हुई। उन्होंने इनकी विजय को न्याय तथा सत्यता की शत्रुता समझा। इसी कारण बहुत दिनों तक वे पार्लमेण्ट की बैठकों में भी न आए।

प्रजा-तन्त्र शासन की यही सबसे बड़ी बुराई है कि प्रजा को झूठ-सच समझाने की जिसमें सबसे अधिक योग्यता है, जो व्याख्यान अच्छा दे सकता है और दबाव ज़्यादा डाल सकता है, वही चुन लिया जायगा। जनता में अपना स्वार्थ समझने की बुद्धि नहीं होती। यह दशा प्रत्येक स्थान पर जहाँ

प्रजातंत्र–वोट और राय पर चुनाव का रिवाज़–होगा, होती है। इससे निराश होना उचित है। हमारे म्युनिस्पलबोर्डों में ही जो नालायक़ तथा अदना आदमी पहुँच जाते हैं—जिनको दो पैसे पर भी कोई नहीं पूछ सकता—वे भी पहुँच जाते हैं—उससे हमें निराशा इसी कारण होती है। यह हमारी या भारत की अयोग्यता का प्रमाण नहीं है; किन्तु प्रजातंत्र शासन-प्रणाली का ही अवगुण है।

श्रीग्लैडस्टन ऐसे आदमी ज़्यादा दिन तक सार्वजनिक सेवा से अलग नहीं रह सकते। ग्लैडस्टन समय-समय पर नाउम्मेद होकर ऊब जाते थे। इससे उनकी कमज़ोरी नहीं ज़ाहिर होती; बल्कि, उनकी आत्मा की ऊँचाई का पता चलता है।

तलाक़ का क़ानून

१८५७ में लार्ड पामर्स्टन की सरकार ने तलाक़ को–पति-द्वारा स्त्री के त्याग को–सरल रीति से पा जाने की इज़ाज़त के लिए एक क़ानून पेश किया। इस क़ानून के मुताबिक़ यदि पति ज़रा भी स्त्री का अवगुण देखे तो उसे छोड़ सकता था। तलाक़ का रिवाज़ इङ्गलैण्ड में बहुत पुराना था। उसका यह उपाय था कि, पहले स्त्री का क़सूर अदालत में साबित कर फिर पार्लामेण्ट में अदालत का हुक्म विचार के लिए भेजना होता था और पार्ला-

मेण्ट की दोनों सभाओं से आज्ञा मिल जाने पर स्त्री तथा पति का सम्बन्ध टूट जाता था।

इस रीति से वही पति तलाक़ पा सकता था, जो बड़ा धनी हो तथा रुपया ख़र्च कर, पार्लामेण्ट के मेम्बरों से मिल कर उन पर अपना प्रभाव डाल सके। इस नये क़ानून से ग़रीब भी तलाक़ पा सकते थे।

यह तलाक़-प्रथा कितनी बुरी है। विवाह एक पवित्र बन्धन है। विवाह जन्म भर के लिए स्त्री-पुरुष का साथ है। वास्तव में विवाह एक दैवी गाँठ है। फिर भला पति को क्या अधिकार है कि जब एक बार स्त्री का बोझा अपने ऊपर ले लिया तब उसके ज़रा से क़सूर पर नाराज़ होकर उसे छोड़ दे? यही नहीं, यदि स्त्री छोड़ना चाहे, पति नालायक़ हो तो उसके लिए उस समय (अब नहीं) क़ानून में कोई गुञ्जाइस नहीं थी। पति को इतना अधिकार देना स्त्री पर अत्याचार करना तथा तलाक़-प्रथा-द्वारा विवाह को एक मज़ाक़ बनाना था।

ऊपर लिखे विचार श्री ग्लैडस्टन के हैं। जब उन्होंने सुना कि पार्लामेण्ट में यह क़ानून पेश हुआ है, तब वे अपने को अलग न रख सके और अन्याय से लड़ाई लेने के लिए समर में कूद पड़े।

उनके प्रभावशाली व्याख्यानों का भी स्वार्थी पुरुष-समूह पर कोई प्रभाव न पड़ा। ग्लैडस्टन के नेतृत्व में उदार-विचार के लोगों ने सरकार का विरोध किया; पर उनकी एक

न चली। अन्त में, ग्लेडस्टन के पक्ष की हार रही। पर इससे क्या, ग्लेडस्टन अपने कर्तव्य पर डटे रहे। वे कर्म करते थे, कर्म के फल की कामना नहीं।

ग्लेडस्टन के जीवन में बार-बार हमको ऐसी घटनाएं मिलती हैं जिनसे यह साफ़ मालूम होता है कि वे गीता के इस पवित्र श्लोक का अक्षरशः पालन करते थे।

कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन।
मा कर्म फल हेतुर्भूर्मातेसंगोस्त्वकर्मणिः॥

अर्थात्, कर्मफल की इच्छा न करो। कर्म करते रहो, पर उससे क्या फल होगा—अर्थात् उससे कितना पुण्य मिलेगा इस विषय पर विचार मत करो।

सचमुच में ज्ञानी वही है जो सच्चे रास्ते पर केवल इसलिए चलता है कि उसे सच्चे रास्ते पर चलना चाहिए। वह उस रास्ते पर इसलिए नहीं चलता कि इससे यश या परलोक बनेगा। ये दोनों तो छोटी चीज़ें हैं जो कर्म-वीर के पैरों तले आपसे आप लोटा करती हैं।

आयोनियन द्वीप की जाँच

लार्ड पामर्स्टन की पार्लामेण्ट में ज़्यादा दिन तक न चल सकी और लार्ड डर्बी का मंत्रि-मण्डल बना। इसमें सर एडवर्ड बलवर लिटन उपनिवेश-सचिव थे।

ईसवीय सन् १८१५ की बात है जब बड़े-बड़े राष्ट्रों की

पेरिस (फ्रान्स की राजधानी) में एक सभा हुई उस सभा में और-और बातों के निपटारे के अलावा यूनान के पास ही जो सात यूनानी टापू—जहाँ यूनान की ही औलाद बसते थे—ज़बर्दस्ती इङ्गलैण्ड के संरक्षण में कर दिये गए। इन टापुओं को मिलाकर आयोनियन टापू कहते हैं। इनमें एक महासभा क़ायम की गई तथा उनके ऊपर एक अँग्रेज़ी कमिश्नर रक्खा गया जो वहाँ के शासन की देख-भाल करता था। महा-सभा तो महज़ नाममात्र को थी।

यह प्रबन्ध टापू के निवासियों को बिलकुल नापसन्द था। वे यूनान की सन्तान थे। वे यूनानी थे और उनकी इच्छा थी कि यूनान राज्य से ही उनका सम्बन्ध रहे। बृटिश सङ्गीनों के ज़ोर पर ही इङ्गलैण्ड उन पर अपना कब्ज़ा जमाए था। उनकी महासभा इङ्गलैण्ड से लगातार सम्बन्ध हटाने का प्रस्ताव करती थी और कमिश्नर साहब नाराज़ होकर सभा को बर्ख़ास्त कर देते थे।

यह झगड़ा बहुत दिनों से चला आ रहा था और बृटिश-मंत्री हमेशा सङ्गीनों का ज़ोर दिखाकर द्वीप-निवासियों को दबाये रहते थे। पर, आख़ीर इस तरह कितने दिन काम चल सकता था। जब सर लिटन उपनिवेश-सचिव हुए तो उन्होंने यह पता लगाने का निश्चय किया कि वास्तव में वहाँ झगड़े की जड़ क्या है तथा इतनी परीशानी क्यों चली आ रही है। उन्हें इस जाँच के लिए एक ऐसे योग्य आदमी की ज़रूरत पड़ी जो

हर प्रकार से इस काम के योग्य हो—पर, ग्लैडस्टन से बढ़कर योग्य आदमी उनको और कौन मिलता ?

पहले तो लोगों ने समझा कि ग्लैडस्टन ऐसे सीड़ीपन के काम को क्यों लेने लगे। कुछ ने तो इनको इस पद के अयोग्य ही बतलाया। पर श्रीग्लैडस्टन ने इस कार्य को अत्यन्त महत्व-पूर्ण समझा तथा आयोनियन टापू की मुसीबत जाँचने के लिए तथा उनको यह समझाने के लिए कि बृटिश राज्य की छत्र-छाया में रहने से तुम्हें अच्छी सड़कें, अच्छे नगर, अच्छा व्यापार, अच्छा शासन मिल रहा है फिर तुम यूनान की बद-इन्तज़ामी भरी हुकूमत में क्यों जाना चाहते हो ? पर श्रीग्लैड-स्टन को अन्त में यह बात मालूम हो गई कि स्वाधीनता के सामने अच्छी सड़कें, अच्छे नगर तुच्छ पदार्थ हैं।

यूनान में स्वागत

ग्लैडस्टन यूनानी भाषा के बड़े पण्डित थे। युवावस्था में इनके लिए सबसे सुख का काम यूनान के पुराने ग्रन्थों में डूबे रहना था। उस समय से ही ये उन ग्रन्थों के जन्म-स्थान को देखना चाहते थे। यूनान पहुँचने पर और वहाँ के प्राचीन लेखकों के जन्म-स्थान को देखकर इन्हें अपार हर्ष हुआ। यूनान में इनका स्वागत भी धूमधाम से हुआ।

आयोनियन टापू में इनकी यात्रा सरकारी तौर पर हुई, फिर

भी प्रजा ने बड़ी धूमधाम से इनका स्वागत किया। यद्यपि अपने व्याख्यानों में ये यही समझाते रहते थे कि इङ्गलैण्ड के साथ रहना ही विशेष फ़ायदे का है; पर यूनान की प्रजा ने इनको अपनी कामना का शुभ मन्त्र सुनानेवाला समझा।

ग्लैडस्टन की इस यात्रा का एक बड़ा लाभप्रद फल यह हुआ कि इङ्गलैण्ड की प्रजा को यह बात साफ़ मालूम हो गई कि आयोनियन प्रजा के दुःख क्या हैं और वे क्यों नाराज़ हैं। यह भी मालूम हो गया कि वे बृटिश सङ्गीनों के बल पर ज़्यादा दिन तक ग़ुलाम नहीं रक्खे जा सकते। यदि ग्लैडस्टन के समान निर्भीक, स्पष्ट, तथा सत्यवक्ता वहाँ न गया होता तो शायद वहाँ की प्रजा का दुःख इंगलैंड तक साफ़ न सुनाई पड़ता।

कुछ ही दिनों बाद यूनान में क्रान्ति हुई और वहाँ के भोंदू बादशाह निकाल दिये गए तथा बड़ी कोशिशों पर नाम मात्र के लिए, ढूँढ कर एक दूसरा राजा गद्दी पर बैठाया गया। उस समय इङ्गलैण्ड ने स्वयं अपने हाथों, असली हालत समझ कर, आयोनियन टापू को यूनान के हवाले कर दिया। यह कार्य श्री ग्लैडस्टन की चेष्टा का ही अप्रत्यक्ष फल है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। ग्लैडस्टन की 'आयोनियन-जाँच' एक मशहूर घटना है।

तूफ़ानों का ढेर

१८६० का वर्ष तूफ़ानों का साल था। यूरोप में चारों ओर आँधी उठ रही थी। अमेरिका में दासता-प्रथा को अन्त कर

देने के सवाल पर उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका में लड़ाई छिड़ने ही वाली थी। उत्तरी अमेरीका चाहता था कि सब जगह ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया जाय। पर दक्षिणी अमरीकावाले नहीं चाहते थे कि यह प्रथा समाप्त हो और वे जी-जान से लड़ने के लिए तैयार थे। संयुक्त-राज्य अमेरिका में श्री अब्राहम लिंकन ऐसे स्वाधीनता के पुजारी राष्ट्रपति होने वाले थे अतः यह लड़ाई छिड़ने ही वाली थी।

इटली में कौंट काबूर नामक देशभक्त शाहज़ादा बादशाह विक्टर इम्यानुयेल की सहायता से सारे इटली को एक संगठित राज्य बनाने के लिए कमर कसे हुए चारों ओर लड़ाइयाँ लड़ कर आज़ादी पा रहे थे।

इधर फ़रांसीसी सम्राट् नेपोलियन तृतीय बड़े ज़ोरों के साथ अपने दुश्मन-राज्य आस्ट्रिया को नष्ट करने की तैयारी में लगा हुआ था।

इन्हीं तूफ़ानों के समय लार्ड डर्बी का मन्त्रि-मण्डल हार गया और लार्ड पामर्स्टन प्रधान मन्त्री हुए। एक बात साफ़ थी और वह यह कि श्री ग्लैडस्टन से यद्यपि लार्ड पामर्स्टन की राय पूरी तरह कभी नहीं मिली पर अन्त तक ग्लैडस्टन, इस समय से, लार्ड पामर्स्टन की नेतागिरी में ही काम करते रहे। लार्ड पामर्स्टन की उम्र उस समय ७१-७२ वर्ष की थी। फिर भी वे बड़ी मुस्तैदी और बड़े परिश्रम से काम करते थे

सौ—डेढ सौ वर्ष के भीतर तक इनके बराबर सर्व-प्रिय प्रधान मन्त्री इङ्गलैण्ड में नहीं हुआ था।

अस्तु, पामर्स्टन की सरकार में श्री ग्लैडस्टन फिर से अर्थ-मंत्री हुए और इन्होंने यूरोप की आँधी का ख़याल न कर, अपने देश की आर्थिक-अवस्था सुधारने का काम फिर शुरू किया।

फ्रान्स से मित्रता

इन्होंने जो पहला उपयोगी काम किया वह था फ्रान्स के साथ व्यापारिक सन्धि। दोनों राज्यों में तिज़ारती सन्धि हो जाने से इङ्गलैण्ड की ग़रीब जनता को शराब में जो बहुत ख़र्च पड़ता था 'ठण्ड़े देश में थोड़ी सी शराब ज़रूरी होती है' वह बहुत कम हो गया क्योंकि वहाँ से सस्ती शराब यहाँ आने लगी। दोनों स्थानों के तिज़ारती सम्बन्ध के कारण इङ्गलैण्ड के कपड़े भी फ्रान्स में बिकने लगे और उनकी बिक्री बढ़ गई।

समाचार-पत्रों का कर

टोरी-दल ने इस डरसे कि, 'अख़बारों के बढ़ जाने से वे सुधारका मन्त्र जनता को पढ़ावेंगे' अख़बारों की बढ़ती रोकने लिए उन पर कड़ी चुङ्गी लगा रखी थी। पहले तो अख़बारों की कापी पर चार पैंस (अँग्रेज़ी पैसा) का टिकट लगाना पड़ता था। पीछे यह एक पैंस हो गया। इसके अलावा पत्र में

छपनेवाले विज्ञापनों पर, फ़ी विज्ञापन ६ पेंस कर लगता था। एक सरकारी अफ़सर इस काम के लिए होता था जो आधी रात के बाद, सब दैनिक अख़बारों के दफ़्तर में जाता और देखता कि क्या छप रहा है। उस समय वह जिस बात को 'विज्ञापन' समझता, लाल निशान लगा देता और अख़बारवालों को उसका कर देना पड़ता।

धीरे-धीरे इङ्गलैण्ड में जनता की उन्नति के लिए इस ज़रूरी चीज़ पर से कर उठाने के लिए आन्दोलन शुरू हो रहा था। श्री ग्लैडस्टन की जन्म-भूमि लिवरपूल ने पहलेपहल एक पेंस दाम का एक दैनिक पत्र निकाला, इसके बाद और शहरों ने भी उन्हीं के अनुसार चलना शुरू किया। पर विचारे सरकारी चुङ्गी के कारण मरे जा रहे थे।

ग्लैण्डस्टन ने पार्लामेण्ट में प्रस्ताव किया कि अख़बारों पर से कर उठा दिया जाय। उन्होंने कहा कि, जनता इतनी होशियार है कि गन्दे अख़बार नहीं निकालेगी। उसे कर के बोझ से दबाकर अपनी दिमाग़ी उन्नति करने के लिए रोकना अत्याचार है। जो अख़बारवाले उस समय पार्लामेण्ट के मेम्बर थे, उन्होंने यह समझा कि इस प्रकार सस्ते अख़बार निकलेंगे और उनके व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचेगा। उन्होंने लाख सर पटका, सरदार सभा ने नामंज़ूर तक कर दिया; पर पार्लामेण्ट की दूसरी बैठक में अन्तिम बार यह कर एक दम उठा दिया गया

और अख़बारी दुनिया को सदा के लिए आज़ाद कर ग्लैडस्टन ने अपना नाम अमर कर दिया।

अमेरीका का गृह-युद्ध

इसी समय—१८६१ में वह बात, जिससे लोग डरा करते थे शुरू हो गई। वह था अमेरीका का गृह-युद्ध। अमेरीका के इस गृह-युद्ध के विषय में हम ऊपर थोड़ासा बतला आए हैं। अब अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। इतना ही कह देना काफ़ी होगा कि उन दिनों श्री ग्लैडस्टन को बड़ी मुश्किल से इङ्गलैण्ड को इस कलह में पड़ने से बचाना पड़ा। उस अवसर पर ग्लैडस्टन ने एक बड़ी ग़लती यह की कि, अवस्था बिना समझे ही, एक व्याख्यान में, ग़ुलामी-प्रथा के पक्षपाती दक्षिण अमेरीकावालों की तारीफ़ कर डाली। उनके मित्र ब्राइट इत्यादि इङ्गलैण्ड में संयुक्त-राज्य की प्रशंसा करते फिरते थे। इस कारण उनको भी ग्लैडस्टन की यह बात बुरी मालूम पड़ी। जो लोग ग्लैडस्टन को उदार विचारों का अगुआ समझते थे, वे भी नाराज़ हो गए। किन्तु ग्लैडस्टन की तारीफ़ इसमें है कि उन्होंने साफ़ तौर पर, बाद में अपनी ग़लती स्वीकार करली और कहा, 'मैंने जल्दबाज़ी की'।

लंकाशायर में अकाल

संयुक्त-राज्य के युद्ध में श्रीग्लैडस्टन का विशेष सम्बन्ध नहीं था क्योंकि यह काम तो विदेश-मंत्री के समझने व सम्हालने

का है। पर इस युद्ध के कारण इङ्गलैण्ड का एक बहुत बड़ा नुक़सान हुआ और उसमें ग्लैडस्टन को अपनी अक़्ल ख़र्च करनी पड़ी तथा अन्त में उसी कारण उनकी बड़ी प्रशंसा हुई।

संयुक्त-राज्य से लंकाशायर के कपड़े के कारख़ानों में रुई आया करती थी; जिससे वे कपड़ा बनाते थे। पर अमेरीका के बन्दरगाहों को दक्षिणी अमेरीका के जहाज़ों ने घेर लिया था इस कारण रुई न आ सकी। कारख़ाने बेकार होकर बन्द पड़े रहे तथा लोगों के भूखों मरने की नौबत आ पहुँची। रुई के इस अकाल से देश का बहुत बड़ा नुक़सान हो रहा था पर ग्लैडस्टन ने बड़ी तत्परता से काम किया। दूसरे देशों से रुई मँगवाने का प्रबन्ध कराया गया तथा सरकार ने अपने पास से रुपया देकर कारख़ानों की बड़ी मदद की।

लार्ड पामर्स्टन की मृत्यु

१८६५ में उत्तरी अमेरीका जीत गया और दक्षिणी अमेरीका हार गया। इङ्गलैण्ड को अर्थ-सङ्कटों से श्रीग्लैडस्टन धीरे-धीरे बाहर निकाल लाए थे। प्रतिवर्ष लाभपूर्ण आय-व्यय के ब्योरे सभा में पेश और पास होते गए।

१८६५ में ही एक ऐसी घटना हो गई जिसने श्रीग्लैड-स्टन को आपसे आप लिबरल-दल का नेता बना दिया। दिन

च दिन यह बात साफ़ हो गई कि ग्लैडस्टन एकदम उन्नतिशील विचारों के हैं। १८६४ में उन्होंने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था कि पार्लामेण्ट की मेम्बरी के चुनाव में किसानों, मज़दूरों सबको अधिकार मिलना चाहिए तथा अभी तक जो अमीर ही वोट दे सकते हैं, वह न हो। इस बात से तो यह साफ़ हो गया कि सर राबर्ट पील का चेला अब लार्ड पामर्स्टन तथा लार्ड जॉन रसेल से भी अधिक बढ़कर उदार हो गया। १८६५ में, ८१ वर्ष की अवस्था में सुयोग्य वृद्ध लार्ड पामर्स्टन स्वर्गलोक सिधारे।

बृटेन के दो दल

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ ओमेन लिखते हैं—

"पामर्स्टन की मृत्यु के बाद यह स्पष्ट हो गया कि बृटेन के दो राजनीतिज्ञ-दल, टोरी और लिबरलों का स्वरूप उनके परदादाओं के समय से अब बिल्कुल बदल गया है। लिबरल, श्रीग्लैडस्टन की नेतागीरी में, अपने विचारों में बड़े प्रजातंत्रीय थे। वे मध्यम श्रेणी के लोगों के हाथ से निकाल कर राजनीतिक अधिकार, वोट देने का हक़ बढ़ाकर, जनता के समूह के हाथों देना चाहते थे। ये नये, वोट के अधिकारप्राप्त आदमी अपने काम के योग्य अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा-द्वारा योग्य बनाये जानेवाले थे तथा 'काग़ज़ पर चुपके से वोट देने का तरीक़ा' चलाकर इन्हें नाजायज़ प्रभाव से बचाने का उपाय किया जानेवाला था।

घरेलू सुधार की ओर लिबरलों का ध्यान ज़्यादा था और वे देश के बाहरी बातों में कम ध्यान देते थे तथा सेना और जङ्गी बेड़ों पर रुपया बहाना बुरा समझते थे।"

"नये अनुदार-दल की नीति, (टोरी-दल की नीति) जिसके जन्मदाता श्रीडिसरायेली थे, साम्राज्यवादी नीति कही जाने लगी क्योंकि, डिसरायेली को बृटिश-साम्राज्य के विस्तार में बड़ा विश्वास था तथा उनका कहना था कि यूरोपियन राजनीतिक मामलों में बृटेन को मज़बूत हिस्सा लेना चाहिए। वे मातृभूमि इङ्गलैण्ड को बाहर फैले उसके उपनिवेशों से और भी जोड़ रखना चाहते थे और सारे साम्राज्य का एक साथ शासन करना चाहते थे और चारों ओर बृटिश नाम का भय पैदा कर देना चाहते थे। वे वोट का अधिकार बढ़ाने के लिए तैयार थे, पर लिबरलों जैसा नहीं, तथा मज़दूरों की दशा को उदार क़ानूनों-द्वारा सुधरवाने का प्रस्ताव करते थे।"

अब हम श्रीग्लैडस्टन के जीवन की उस बड़ी कोशिश का ज़िक्र करेंगे जिसने कुछ ही दिनों में उनके नाम की ज्योति को दुगना कर दिया।

ग्लैडस्टन की हार

उन दिनों आयरलैण्ड में अशान्ति बढ़ती ही जा रही थी। वहाँ की जनता बृटिश सरकार से जितना ही सम्बन्ध तोड़ने

की कोशिश करते थे, बृटिश सरकार उतने ही ज़ोरसे उन्हें जकड़े रखना चाहती थी।

आयरलैण्ड में स्वराज्य—वादियों का आन्दोलन बहुत बढ़ने लगा था और ये सिनफ़ेन आन्दोलक कहे जाते थे। इन्होंने सशस्त्र क्रान्ति की चुपके-चुपके तैयारियाँ शुरू कीं। इन्होंने एक साथ ही देश भर में बलवे की तैयारी की। सरकार को परीशान करने के लिए कनाड़ा पर (यह उत्तरी अमेरीका में एक प्रसिद्ध अँग्रेज़ी उपनिवेश है) हमला करने के लिए छोटी सी सेना तैयार की गई।

किन्तु, तीन कारणों से ये सफल न हो सके। एक तो, इनमें संगठन अच्छा न था। दूसरे कई स्थानों पर डर कर लोग ऐन मौक़े पर भाग गए। तीसरे, इन्हीं में से कुछ दुश्मन तथा देश-द्रोही निकल आए। परिणाम यह हुआ कि कई स्थानों पर छोटे-छोटे बलवे होकर रह गए जिनको बृटिश सेनाने फ़ौरन दबा दिया। कनाड़ा पर जो हमला हुआ था उसमें, छोटी सी सेनाने ही हरा दिया। इङ्गलैण्ड में भी दो-एक स्थानों पर कुछ उपद्रव किया गया था। पर बृटिश सङ्गीनों ने सबको दबा दिया और परिणामस्वरूप सैकड़ों की जानें गईं और कितनों को उनको देश-भक्ति के लिए प्राणदण्ड मिला।

यद्यपि बलवे दबा दिये गये पर बृटेन के उदार दलवाले यह सोचने लगे कि, इससे काम न चलेगा; किन्तु, जनता के दुःखों का पता लगा कर उसे दूर करना ही मर्ज़ का इलाज़ करना है।

श्री ग्लैडस्टन ने पता लगाकर यह अच्छी तरह समझ लिया कि आयरलैंगड की जनता की नाराज़गी का बहुत बड़ा कारण यह है कि वहाँ के ज़्यादातर आदमी पुराने, सनातनी गिर्जाघर को मानने वाले हैं—कैथोलिक हैं। पर इङ्गलैण्ड की सरकार की ओर से ज़बर्दस्ती नये विचारोंका-आर्य समाजी गिर्जाघर—प्रोटेस्टैण्ट गिर्जा—उनके सर पर लादा गया है जिससे उनको धार्मिक दुःख होता है। श्री ग्लैडस्टन ने इङ्गलैण्ड के नये विचारवाले ईसाइयों के क्रोध की परवा न कर, साफ़ कह दिया कि आयरलैण्ड को हमारा सरकारी गिर्जाघर नहीं चाहिए, उसे तोड़ दो।

१८६६ में, ५ वर्ष पूरे हो जाने के कारण, पार्लमेण्ट का क़ायदे के मुताबिक चुनाव फिर से करना पड़ा। इसमें श्री ग्लैडस्टन ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के निर्वाचन-क्षेत्र से मेम्बरी के लिए खड़े होने के समय यही बात कही। इससे इनके साथी तक नाराज़ हो गए और ग्लैडस्टन बुरी तरह हार गए। इनके मित्रों ने यह हालत पहले से ही समझ ली थी, इसीलिए दक्षिणी लङ्काशायर-निर्वाचन-क्षेत्र से भी इनको उम्मीदवार बनाया था। यहाँ से श्रीग्लैडस्टन चुन लिए गए; पर, ज़्यादा वोटों से नहीं।

ग्लैडस्टन विचलित होने वाले नहीं थे। लार्ड पामर्स्टन मर ही चुके थे। इस कारण लार्ड जॉन रसेल, जो अति वृद्ध हो गए थे, प्रधान-मंत्री हुए और श्री ग्लैडस्टन साधारण सभा में सरकारी प्रतिनिधि और अर्थ-मन्त्री रहे। इन्होंने उस साल

"साधारण जनता को वोट का अधिकार" दिलाने के लिए एक 'रिफ़ार्म-बिल' यानी सुधार-क़ानून पेश कराया और इसके लिए बड़ी ज़बर्दस्त कोशिशें कीं। पर डिसरायेली ने इस बार घोर विरोध करके हरा दिया और लार्ड रसेल और श्री ग्लैडस्टन को जून, १८६३ में ही इस्तीफ़ा देना पड़ा। अब लार्ड डर्बी प्रधानमन्त्री और श्री डिसरायेली ग्लैडस्टन के स्थान पर मन्त्री हो गए।

डिसरायेली यह समझते थे कि पार्लामेण्ट में लिबरल दल वालों का ही बहुमत है और यदि सम्हलकर पैर न रक्खा जायगा तो टोरी-दल हार जायगा। देश में सुधार-बिल के नाम पर आन्दोलन हो रहा था और पार्लामेण्ट में यद्यपि ग्लैडस्टन के सुधार-बिल पर वोट पूरी न मिल सकीं तो क्या, मेम्बर कुछ सुधार ज़रूर ही चाहते थे। इस कारण श्री डिसरायेली ने अपना नया सुधार बिल पेश किया। इसमें उस आदमी को जो कमसे कम बैङ्क में ३० पौंड यानी ४५०) रुपये जमा किये हों, या सरकारी काम में ५० पौंड यानी ७५०) लगाये हो, या जिसकी ऊँची दर्जे की शिक्षा हो, वह दूसरी वोट दे सकता था। यह बिल, पार्लामेण्ट में कुछ संशोधन होने के बाद पास हो गया और डिसरायेली की बहुत बड़ी जीत हो गई। इस जीत से यद्यपि पूरी तरह तो नहीं फिर भी कुछ अंश में ग्लैडस्टन की मंशा फलवती हुई।

सुधार-बिल के कारण ही श्रीग्लैडस्टन का इतना नाम देश

में हो गया था और बहुत आशा थी कि अब बूढ़े लार्ड जॉन रसेल के मर जाने के कारण, श्रीग्लैडस्टन ही प्रधान-मन्त्री होंगे। पर डिसरायेली के सुधार-बिल के पास हो जाने के कारण ग्लैडस्टन के विरोधी बड़े प्रसन्न हुए। ग्लैडस्टन की जीवनी के लेखक—उनके उस समय के एक मित्र का—कहना है कि, वे मज़ाक उड़ाकर कहते—'लो अब ग्लैडस्टन तो ख़ाक में मिल गए और अब उनको प्रधान-मन्त्री बनने का उम्मीद भी ख़ाक में मिल गई'।

इधर लार्ड डर्बी बीमारी के कारण प्रधान-मन्त्री पद से हट गए और पहली बार, सरदार-सभा का नहीं, किन्तु साधारण सभा का एक मामूली सदस्य जो न तो लार्ड था या 'सर' था, अर्थात् डिसरायेली प्रधान-मन्त्री हो गए। किन्तु, इनके प्रधान-मन्त्री होने के कुछ ही मास बाद, आयरलैण्ड को सन्तुष्ट करने के लिए ग्लैडस्टन ने यह प्रस्ताव किया कि वहाँ से सरकारी प्रोटेस्टेण्ट गिर्जाघर तोड़ दिया जाय और यह प्रस्ताव पास हो गया। डिसरायेली ने लाख चाहा कि यह प्रस्ताव पास न हो, पर वे हार गए और उनको और उनके मंत्रि-मण्डल को इस्तीफ़ा देना पड़ा।

प्रधान मंत्री ग्लैडस्टन

अब हमारे चरितनायक श्रीग्लैडस्टन उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गए। बृटिश-साम्राज्य में जो सबसे बड़ा पद, जो

सबसे बड़ी इज़्ज़त हो सकता है उस पर दिसम्बर १८६८ में श्रीग्लैडस्टन पहुँच गए, यानी प्रधान-मंत्री हो गए।

प्रधान-मंत्री होते ही इन्होंने आयरलैण्ड को सन्तुष्ट करने के लिए दो बहुत ज़रूरी क़ानून बनाए। एक तो आयरलैण्ड के आयरिश गिर्जाघर को तोड़ देना। अर्थात् सरकार का इस काम से हाथ खींच लेना। दूसरा था भूमि-क़ानून। इसमें आयरलैण्ड के किसानों को उन सम्पूर्ण उन्नतियों के लिए, जो उन्होंने अपने खेत में की हों, उसके लिए सरकार की ओर से रुपया देने का प्रबन्ध था तथा उन्हें सरकार हर तरह से सहायता देकर ज़मींदारों से अपनी ज़मीन वापस ख़रीदने में सहायता देनेवाली थी।

किन्तु, ग्लैडस्टन के इन क़ानूनों से स्वाधीनता-प्रेमी आयरलैण्ड की जनता को ज़रा भी शान्ति न मिली और १८७० में सरकार को वहाँ शान्ति स्थापन के लिए और सेना भेजनी पड़ी।

ग्लैडस्टन ने बहुत से घरेलू सुधार किए। इनमें 'शिक्षा-क़ानून' (एजूकेशन-ऐक्ट) सबसे मशहूर है। इस क़ानून ने सभी अँग्रेज़ बच्चों को स्कूल जाना ज़रूरी कर दिया तथा इनकी ग़ैर-हाज़िरी पर क़ानूनी-दण्ड की व्यवस्था की। इसके साथ ही देश में चारों ओर ज़रूरत पूरी करने के लिए बहुत से स्कूल खुलवाये गए। शिक्षा ऐसी ज़रूरी चीज़ का अति-आवश्यक क़ानून इङ्गलैण्ड के हक़ में कितना अच्छा हुआ—यह आगे चलकर

इङ्गलैण्ड निवासियों को पता चला। हम जानते हैं कि इस क़ानून के लिए इङ्गलैण्ड-निवासी श्रीग्लैडस्टन के जन्म भर कर्ज़-दार रहेंगे। इङ्गलैण्ड की आज जो कुछ तरक़्क़ी है, वह इसी वास्ते कि, वहाँ का बच्चा-बच्चा पढ़ा-लिखा होता है और हमारे यहाँ मुश्किल में सौ में से एक। हमारे देश में न पढ़ने के कारण ही इतना पतन, इतनी ख़राबी और इतनी बुराई फैली है।

धर्म, समाज, जाति और देश, सबकी उन्नति के लिए, शिक्षा ही एक ज़रूरी साधन है। जो पढ़ा-लिखा है, वह अमीर भले ही न हो, पर धर्म तथा समाज का सच्चा सेवक होगा और विद्वान् मनुष्य कभी बुरे पथ पर न चलेगा।

दूसरा ज़रूरी सुधार वोट देने के तरीक़े में करना था। सब के सामने वोट देने के कारण लोग भय, दबाव और सङ्कोच के कारण उस आदमी को वोट दे बैठते हैं जो उनको हृदय से पसन्द नहीं है। ग्लैडस्टन ने इसी कारण एक काग़ज़ पर लिखकर, जिस आदमी को वह चाहे, वोट देने का तरीक़ा निकाला। यह काग़ज़ अफ़सर के अलावा और कोई देख ही नहीं सकता था। इस सुधार से भी इङ्गलैण्ड का जो उपकार हुआ होगा, वह पाठक स्वयं सोच सकते हैं। किन्तु, यह ध्यान रखना चाहिए कि अभी तक किसानों को वोट देने का अधिकार नहीं मिला था।

आगे बढ़ने के पहले हम दो बातें बतला दें। १८७० में ही जर्मनी और सम्राट् नेपोलियन तृतीय की गहरी लड़ाई हुई जिस

में फ्रान्स बुरी तरह हार गया। उसके दो सूबे, अलसेस और लॉरेन जर्मनी ने छीन लिए। जर्मनी की जीत के बाद, फ्रांस में प्रजा का राज्य घोषित हो गया और उस समय से वहाँ से राजतन्त्र-शासन उठ गया।

उन्नति के उच्चतम शिखर पर

१८७४ में पार्लमेंट के दुबारा के चुनाव में अनुदार दल वालों की ही जीत रही तथा श्री डिसरायेली फिर प्रधान-मन्त्री हो गए। किन्तु पद-ग्रहण करने के बाद ही बालकन-प्रायद्वीप में युद्ध की आँधी आई। रूसके ज़ार तुर्किस्तान पर बहुत दिन से आँख लगाए हुए थे। उन्होंने हमला किया और यूरोप महाद्वीप में जो भी कुछ सुलतान का था, वह जीत लिया। यद्यपि डिसरायेली नहीं चाहते थे कि इसको छेड़ा जाय पर उसका इतना राज्य-विस्तार वे न देख सके।

जब रूसने सुलतान की राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर धावा बोल दिया, तब फ़ौरन बृटिश बेड़ा उधर भेजा गया। इङ्गलैण्ड का विरोध देख कर रूस ने सुलतान से सुलह कर ली और एशिया में जो भी कुछ उनका है, वह उस समय इङ्गलैण्ड के हस्तक्षेप के कारण ही रह गया।

इधर रूस से मनोमालिन्य के कारण, रूस के मित्र अफ़गानिस्तान की अँग्रेज़ों से १८७८-८० तक लड़ाई ज़ारी रही। इसमें इङ्गलैण्ड की जीत भी न हो सकी और रुपया भी बहुत ख़र्च

हुआ। १८७९ में ज़ुलूलैण्ड की लड़ाई में भी, अंग्रेज़ी सेना की बदइन्तज़ामी के कारण, बड़ी हानि हुई। इन कारणों से अनुदार दल की बड़ी बदनामी फैल गई और पाँच वर्ष पूरे हो जाने के कारण १८८० में जो पार्लमेण्ट का चुनाव हुआ, उसमें लिबरल दल का ही बहुमत रहा और श्री ग्लैडस्टन फिर प्रधान-मन्त्री हो गए।

इस प्रकार ग्लैडस्टन ही लिबरल दल के सब से बड़े सितारे थे जिनके हाथों में देश की उन्नति का भार था। किन्तु, यह समय चारों ओर इतनी हलचल का था कि, ग्लैडस्टन घरेलू उन्नति का काम आराम से न कर पाते थे। इनके विदेश-विभाग के मन्त्री लार्ड रोज़बरी थे। योग्यता में बहुत बढ़े चढ़े होने पर भी लार्ड रोज़बरी बिना ग्लैडस्टन की मदद के आगे न बढ़ते थे।

१८७६ में श्री डिसरायेली बेकन्सफ़ील्ड के सरदार होकर सरदार-सभा में पहुँच गए थे और १८७६ से ८० तक, चार वर्ष तक, वे वहीं से प्रधान मंत्री का काम करते रहे। इनके साधारण सभा से चले जाने से सभामें ग्लैडस्टन और डिसरायेली का जो वाक्‌युद्ध देखने को मिलता था, उसका मज़ा जाता रहा।

मिश्र का युद्ध

ग्लैडस्टन को ट्रान्सवाल के मामले से फ़ुर्सत भी न मिली थी कि मिश्र के झमेले में उन्हें पड़ना पड़ा। मिश्र के सूदान प्रान्त

में रुई बहुत अच्छी पैदा होती थी तथा इङ्गलैण्ड के कपड़े के कारख़ाने वहाँ से रुई लेकर बड़ा फ़ायदा उठाते थे। इस कारण अँग्रेज़ी सरकार का इसमें स्वार्थ था कि धीरे-धीरे मिश्र को पूरी तरह अपने कब्ज़े में रखे। मिश्री-स्वाधीनता को अँग्रेज़ हड़प चुके थे। मिश्र से दूसरा महान् लाभ यह था कि १८६९ में स्वेज़ नहर खुल जाने से लालसागर हो कर भारत जाने का बहुत बढ़िया रास्ता निकल आया था जिससे समय तथा ख़र्चे की बड़ी बचत थी। इस राह को अपने कब्ज़े में रखने के लिए भारत और सम्पूर्ण पूरब का व्यापार अपने हाथ में रखने के लिए इङ्गलिस्तान के लिए यह ज़रूरी था कि मिश्र को पूरी तरह अपने पञ्जे में रखे।

पर, मिश्री सदासे नाराज़ थे। उन्होंने सर उठाने का बहुत कोशिशें कीं। १८८२ में तो अरबीपाशा नामक एक देश-भक्त सिपाही ने सशस्त्र बलवा खड़ा किया तथा बहुत जल्दी उसके हज़ारों साथी हो गए। किन्तु, अँग्रेज़ी सेनाने उसे हरा-कर, पकड़ कर, देश निकाला दे दिया तथा मिश्र में अँग्रेज़ी सेना और भी बढ़ा दी गई।

इसी समय मिश्र के सूदान प्रान्त में एक मुसलमान बल-वाई—जो अपने को माहदी कहता था खड़ा हुआ। उसको दबाने के लिए चार्ल्स गार्डन नामक एक सेनापति भेजे गए पर इङ्गलैण्ड से मदद भेजने में इतनी बदइन्तज़ामी की गई कि

वह बेचारा १८८५ में कुछ साथियों के साथ क़त्ल कर डाला गया तथा सूदान पर माहदी का क़ब्ज़ा हो गया।

इस बदइन्तज़ामी के कारण ग्लैडस्टन की सरकार बहुत बदनाम हो गई। किन्तु, इनकी कठिनाई एक बात ने और भी बढ़ा दी और वह था आयरलैण्ड का स्वाधीनता-आन्दोलन।

आयरलैंड

यह हम पाठकों को शुरू से ही बतलाते आ रहे हैं कि आयरलैण्ड का स्वाधीनता-आन्दोलन कितना पुराना है तथा उन्हें स्वाधीनता प्राप्त करने में कितनी यातनायें सहनी पड़ी हैं। सन् १९२० में जाकर आयरलैण्ड को स्वराज्य का आधा सुख मिला किन्तु इस सुख के लिए देश ने कितनी यातना व पीड़ा सही, कितने घर कङ्गाल व अनाथ हो गए, कितनी मातायें बिना पुत्र के तथा कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गईं। सच है, स्वाधीनता के लिए बड़े त्याग की ज़रूरत है।

बृटेन की पार्लमिएट में आयरलैण्ड की ओर से भी कुछ मेम्बर होते थे। ये मेम्बर अपने देश की ओर से आन्दोलन तो करते ही थे, साथ ही सरकार का नाकों दम किये रहते थे। यदि बृटेन के दोनों दलों में आपस में गहरी होड़ रहती तो दोनों ही इस आयरिश गुट को अपनी ओर मिलाकर अपनी शक्ति बढ़ाना चाहते। इस कारण, वे आयरलैण्ड का बड़ा काम निकाल सकते थे। इस गुट का मुखिया चार्ल्स पार्नेल था।

जैसा कि, हम ऊपर बतला आए हैं, ग्लैडस्टन सदैव इङ्ग-

लैण्ड के हित का पहले ध्यान रखते थे। वे जानते थे कि मिश्र, आयरलैण्ड या भारत तीनों इङ्गलैण्ड के व्यापार तथा उन्नति के लिए ज़रूरी हैं, इसलिए उनको कब्ज़े में रखना चाहिए। साथ ही ग्लैडस्टन यह भी समझते थे कि यदि इनको विशेष अधिकार देने की बात करूँगा तो लोग एकदम उल्लू बना डालेंगे। इसीलिए ग्लैडस्टन धीरे-धीरे थोड़ा अधिकार देकर नाराज़ जनता को ख़ुश करना चाहते थे। उस समय आयरलैण्ड में यह क़ायदा था कि ज़मींदार जिस किसान को चाहें, बिना हर्ज़ाना दिए उसके खेत से निकाल सकते थे। श्रीग्लैडस्टन ने यह प्रस्ताव पेश किया कि कोई भी ज़मींदार बिना काफ़ी हर्ज़ाना दिए ऐसा न कर पावे। साधारण सभा में यह पास हो गया पर सरदार-सभा ने इसे रद्द कर दिया। १८८१ में ग्लैडस्टन ने दूसरा प्रस्ताव यह पास कराया कि एक कमीशन बैठा कर आयरलैण्ड के किसानों की लगान की जाँच कराकर उसे कम करके १५ वर्ष के लिए मुक़र्रर कर दिया जाय।

आयरलैण्ड की प्रजा इन बातों से ख़ुश न थी। उन्होंने "भूमिसंघ" क़ायम किया तथा उसमें ज़मींदारों को मारना, मार डालना, उनको बरबाद कर डालना तक अपना काम बनाया। यही नहीं, जो आदमी किसी किसान से छीनी ज़मीन को काम में लावे, उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाता। यह बहिष्कार पहले-पहल कप्तान बायकाट का किया गया था। तभी से 'बायकाट' शब्द बहिष्कार के अर्थ में आने लगा।

सरकार की कुछ भी न चलते देख ग्लैडस्टन बहुत परेशान हुए। इनसे बार-बार कहा जाता था कि ज़ोरो-ज़ुल्म करना चाहिए। पर ये हमेशा उसका विरोध करते रहे। अन्त में १८८२ में इन्होंने चार्ल्स पार्नेल और उनके मित्रों को गिरफ़्तार कर जेल में डाल दिया। जेल में ही सरकार से और इनसे यह समझौता हुआ कि छोड़ दिए जाने पर ये लोग आन्दोलन करने-वालों को ज़्यादतियाँ करने से रोक देंगे। पर आयरलैण्ड में बृटेन के लाट तथा आयरलैण्ड के लिए बृटिश-मंत्री दोनों 'बल-वाइयों' से समझौता करना नापसन्द करते थे और उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया और लार्ड फ़ेडरिक कैवेंडिश आयरलैण्ड के लिए मंत्री हो गए। पद-ग्रहण के ६ दिन बाद ही मई १८८२ में ये और इनके सहायक-मंत्री दिन-दहाड़े मार डाले गए। इस घटना से सारे इङ्गलैण्ड में आग लग गई। लोग क़ानूनों की तलवार से आन्दोलन को काटना चाहते थे और सरकार ने नया कड़ा क़ानून बनाया। पर, इससे आन्दोलन रुका नहीं।

१८८५ में पार्लामेण्ट का फिर से चुनाव कराने के पहले ग्लैडस्टन ने अपनी एक और इच्छा पूरी कर ली। वह थी किसानों को भी वोट देने का अधिकार दिलाना। जून १८८५ में पार्लामेण्ट का फिर से चुनाव हुआ।

किन्तु, पार्लामेण्ट के चुनाव के पहले ही श्रीग्लैडस्टन की एक बार हार हो गई और उनका मंत्रि-मण्डल गिर गया। १८-८१ में ही लार्ड बेकंसफ़ील्ड—वही डिसरायेली—जो इङ्गलैण्ड की

राजनीति का एक महान् तारा था अस्त हो गया था। इसलिए लार्ड सैलिसबरी प्रधान-मंत्री हुए।

नये निर्वाचन में दोनों दलों की संख्या बराबर रही। पर आयरलैण्ड के स्वराज्य-वादी—होम-रूलवाले—ग्लैडस्टन से मिल गए। अतः उनकी संख्या ज़्यादा हो गई और उन्हीं का मंत्रि-मण्डल बना। किन्तु पाठकों को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि ग्लैडस्टन की महान् और न्याय-प्रिय आत्मा अब आयरलैण्ड की पीड़ा न बर्दाश्त कर सकी और इन्होंने उसे स्वाधीनता देने का प्रस्ताव पेश कर दिया।

किन्तु, इङ्गलैण्ड में आयरलैण्ड को ज़बर्दस्ती जाल में रखने की इच्छावाले कहीं ज़्यादा थे। सबके पास ग्लैडस्टन सी महान् आत्मा न थी। इनके कई मित्रों ने मंत्रि-मण्डल से इस्तीफ़ा दे दिया। सगे से सगे ख़िलाफ़ हो गए—ग्लैडस्टन की हार हो गई और पार्लामेण्ट फिर से चुनाव के लिए भङ्ग कर दी गई।

नए निर्वाचन में आयरलैण्ड और इङ्गलैण्ड को मिलाकर रखनेवालों की तादाद ज़्यादा हो गई। इस विचार के लोगों में लिबरल तथा अनुदार दोनों शामिल थे। इस कारण इन्हें 'यूनियनिस्ट' कहते थे। अगस्त १८८६ में लार्ड सैलिसबरी का मंत्रि-मण्डल फिर बना।

१८८७ में महारानी विक्टोरिया के शासन के ५० वर्ष पूरे हो चुके थे और 'जुबिली'-समारोह बड़े धूमधाम से मनाया

गया। १८८९ में पार्नेल के बारे में कुछ बदनामी फैलने के कारण, पार्लामेण्ट में आयरलैण्ड के मेम्बरों में फुटमत हो जाने से गुट कमज़ोर हो गया। १८९१ में पार्नेल के मरने पर भी फूट न ख़त्म हुई, इस कारण इनका स्वाधीनता का आन्दोलन ढीला पड़ गया और इङ्गलैण्ड को अपनी मनमानी करने का मौक़ा कुछ समय के लिए और मिल गया।

१८९२ में फिर से चुनाव हुआ और इस बार फिर लिबरल-दल का बहुमत रहा। श्रीग्लैस्टन पुनः प्रधान-मंत्री हुए।

'केने' में

परन्तु ग्लैडस्टन का स्वास्थ्य दिनों दिन गिरता ही गया। अतएव आबहवा बदलने और तन्दुरुस्ती को सुधारने के विचार से केने में ग्लैडस्टन के आराम का सब कुछ प्रबन्ध कर दिया गया। इनको बड़ी होशियारी से वहाँ ले जाया गया। राह में इनका दर्शन करने के लिए लाखों मनुष्यों की भीड़ लगा करती थी। केने के सब मनुष्य इस 'शानदार बुड्ढे आदमी' को देखने के लिए लालायित रहते थे। ग्लैडस्टन के सभी साथी मर चुके थे। नई पौद के मनुष्य उनके सामने निरे बच्चे थे।

केने में भी इनकी तन्दुरुस्ती न सुधरी। बल्कि, गिरती ही गई। जनता इनके स्वास्थ्य के लिए इतनी उत्सुक रहती थी कि रोज़ अख़बारों में डाक्टरी रिपोर्ट छपवानी पड़ती थी। केने से श्रीग्लैडस्टन अपने पुराने प्रिय स्थान हावार्डन लाये गए। हावा-

डन में इनका स्वास्थ्य कुछ सम्हल गया। राष्ट्र को आशा हो चली कि यह महान्-आत्मा अभी कुछ दिनों तक इङ्गलैण्ड को और पवित्र करती रहेगी। किन्तु, कोई नहीं जानता कि मृत्यु किस समय आ दबोचे।

अन्त

जो महा-दीपक भगवान् ने संसार में भेजा था वह अच्छा होते-होते यकायक अप्रैल सन् १८९८ में बुझ गया।

ग्लैडस्टन की मृत्यु से इङ्गलैण्ड में कितना शोक छा गया, यह लिखने की ज़रूरत नहीं हैं। हम उनके गुणों का पुनः वर्णन करना नहीं चाहते। वास्तव में यह पुरुष एक दैवी-प्रकाश वाला था।

बुढ़ौती में भी कसरत के बल पर इतनी ताक़त रखना हमें लड़कपन से ही कसरत करते रहने की नसीहत देता है। स्कूल-कालिज में पढ़ाई के दिनों में ख़ूब मिहनत से पढ़ना हमें अपने बाल तथा युवा-कालका उपयोग बतलाता है और जीवन-संग्राम में उतर पड़ने पर लगातार लड़ते जाना साहस विश्वास, बल तथा शक्ति का मंत्र देता है।

वीर विजय कुमार

कुमार पुस्तकालय, गुजरांवाला ।